RNI Regd. No. MAH/BIL/2000/8048

SHRI SAI LEELA

Date : 15th August 2014

श्री गुरुपौर्णिमा उत्सव २०१४ सांगता दिन

पत्नी सहित संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री कुंदनकुमार सोनवणे के हाथों गुरुस्थान में रुद्राभिषेक...

साईं समाधि मंदिर में दहीहंडी कार्यक्रम...

पत्नी सहित संस्थान के उप कार्यकारी अधिकारी श्री आप्पा साहेब शिंदे के हाथों श्री साई बाबा की पाद्यपूजा...

श्री साईं बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी) के लिए संस्थान के कार्यकारी अधिकारी द्वारा मे. टैको विजन्स प्रा. लि., ३८ ए व बी, गवर्नमेंट इन्डस्ट्रियल इस्टेट, चारकोप, कांदिवली (प.), मुम्बई - ४०० ०६७ में मुद्रित और साईं निकेतन, ८०४ बी, डा. आम्बेडकर रोड़, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। सम्पादक : कार्यकारी अधिकारी, श्री साईं बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी)

Official Periodical of Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi)

श्री साई बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी) की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA श्री साई लीला

July-August 2014 ₹ 8/-

जुलाई-अगस्त २०१४ ₹ ८/-

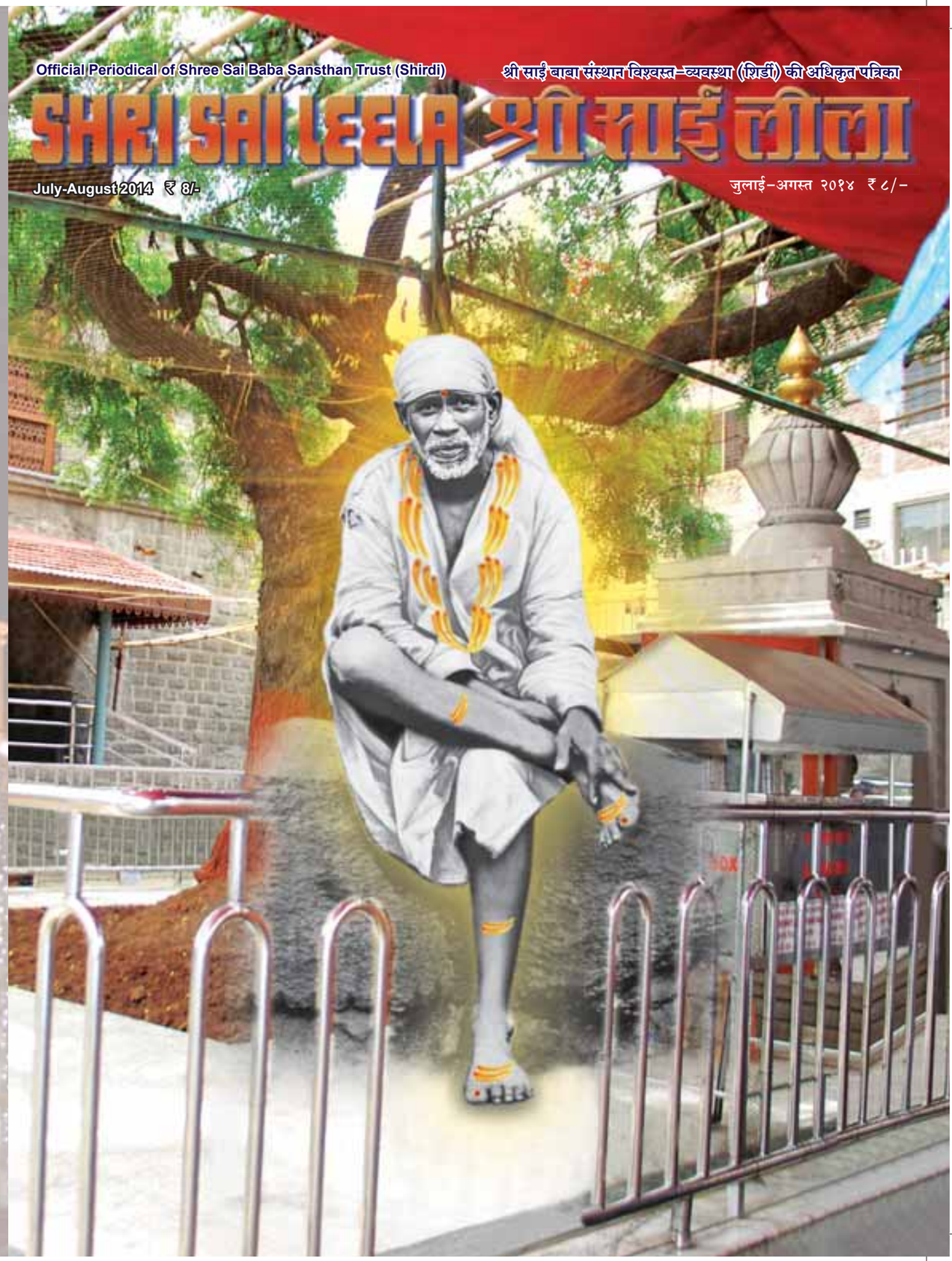

श्री गुरुपौर्णिमा उत्सव २०१४ प्रथम दिन

प्रथम दिन 'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ (संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री कुंदनकुमार सोनवणे), श्री साईं की तस्वीर (उप कार्यकारी अधिकारी श्री आप्पा साहेब शिंदे व मंदिर प्रमुख श्री रामराव शेलके) एवं वीणा (मंदिर पुजारी श्री दिगंबर कुलकर्णी) की शोभायात्रा साईं समाधि मंदिर से द्वारकामाई की ओर; साथ में संस्थान कर्मचारी और भक्त गण...

'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ के अखण्ड पारायण का शुभारम्भ - संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री कुंदनकुमार सोनवणे...

पत्नी सहित संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री कुंदनकुमार सोनवणे के हाथों श्री साईं बाबा की पाद्यपूजा...

श्री गुरुपौर्णिमा उत्सव २०१४ मुख्य दिन

प्रथम दिन 'श्री साईं सत् चरित' ग्रन्थ (संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के अध्यक्ष तथा अहमदनगर ज़िला के प्रधान ज़िला व सत्र न्यायाधीश श्री शशिकांत कुलकर्णी), श्री साईं की तस्वीर (संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के सदस्य तथा कार्यकारी अधिकारी श्री कुंदनकुमार सोनवणे व उप कार्यकारी अधिकारी श्री आप्पा साहेब शिंदे) एवं वीणा (मंदिर प्रमुख श्री रामराव शेलके) की शोभायात्रा द्वारकामाई से वापस साईं समाधि मंदिर की ओर; साथ में संस्थान कर्मचारी और भक्त गण...

पत्नी सहित संस्थान की त्रि-सदस्यीय व्यवस्थापन समिति के अध्यक्ष तथा अहमदनगर ज़िला के प्रधान ज़िला व सत्र न्यायाधीश श्री शशिकांत कुलकर्णी के हाथों श्री साईं बाबा की पाद्यपूजा...

पत्नी सहित महाराष्ट्र के कृषि तथा विपणन मंत्री श्री राधाकृष्ण विखे पाटिल के हाथों श्री साईं बाबा की पाद्यपूजा...

SHREE SAI BABA SANSTHAN TRUST (SHIRDI)

Management Committee

Hon. Sri Shashikant Kulkarni
(Principal District & Sessions Judge, Ahmednagar)
Chairman

Hon. Sri Anil Kavade
(District Collector, Ahmednagar)
Member

Hon. Sri Kundankumar Sonawane
(Deputy Divisional Officer, Shirdi, Ahmednagar)
Member & Executive Officer

Hon. Sri Appasaheb Shinde Deputy Executive Officer

इंटरनेट आवृत्ति - URL:http://www.shrisaibabasansthan.org

श्री साई लीला

स्थापित वर्ष १९२३

वर्ष १४ अंक ४

सम्पादक :
कार्यकारी अधिकारी, श्री साई बाबा संस्थान विश्वस्त-व्यवस्था (शिर्डी)

SHRI SAI LEELA

Estd. Year 1923

Year 14 Issue 4

Editor :
Executive Officer, Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi)

अंतरंग

- सम्पादकीय... २
- Shri Krishna and Shirdi Sai Baba are really Non-Different and act exactly alike... : Dr. Subodh Agarwal 3
- सद्गुरु श्री साईं नाथ - धरा तल पर अद्भुत अवतरण : मदन गोपाल गोयल ९
- गुरु पूर्णिमा : रजनी प्रभा १२
- भगवान् दत्तात्रेय - भाग ४ : मदन गोपाल गोयल १३
- सद्गुरु श्री साईं संदेश... : रीता मलिक १६
- नित्य प्रतीति से करना अनुभव १९
- Shri Sai Baba - God or Guru ? : Shamshaad Ali Baig 21
- Shirdi News 25

• Cover & other pages designed by Prakash Samant & Taco Visions Pvt. Ltd. • Computerised Typesetting: Computer Section, Mumbai Office, Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) • Office : 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 24166556 Fax : (022) 24150798 E-mail : saidadar@sai.org.in • Shirdi Office : At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in • Annual Subscription : ₹ 50/- • Subscription for Life : ₹ 1000/- • Annual Subscription for Foreign Subscribers : ₹1000/- (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) • General Issue : ₹ 8/- • Shri Sai ***Punyatithi*** Special Issue : ₹ 15/- • Published by Executive Officer, on behalf of Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and printed by him at Taco Visions Pvt. Ltd., 38 A & B, Government Industrial Estate, Charkop, Kandivali (W), Mumbai - 400 067. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.

सम्पादकीय...

भूत-वर्तमान-भविष्य ये तीन काल, उत्पत्ति-स्थिति-लय ये तीन अवस्थाएँ, सत्त्व-रज-तम ये तीन गुण, इन सबका संचालन-सूत्र जिनके हाथों में है, वे ब्रह्मा-विष्णु-महेश इन त्रय देवताओं के इकट्ठे स्वरूप को 'श्री गुरु देव दत्त' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।... वे देवता भी हैं, और गुरु भी! इसीलिए, **''गुरुर्ब्रह्मा:, गुरुर्विष्णु:, गुरुर्देवो महेश्वर:, गुरु: साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नम:।।''** इस प्रार्थना से उन्हें नतमस्तक हो, वंदन किया जाता है। ऐसे इस त्रिलोक के गुरुदेव ने जीव सृष्टि के २४ जीवों को अपना गुरु माना और जीव सृष्टि के इन तुच्छ माने जाने वाले जीवों से भी कुछ बहुमूल्य ज्ञान प्राप्त होता है, यह अनमोल सीख हमें दी।...

श्री गुरु देव दत्त के लक्षण कलियुग के साईं अवतार में दिखाई देने के कारण साईं बाबा अपने भक्तों के देवता भी बने, और गुरु भी! शिर्डी में साईं बाबा के प्रत्यक्ष निवास के क़रीब ६० वर्ष के अंतराल में तथा साईं महासमाधि के पश्चात् क़रीब क़रीब ९५ वर्ष से भी अधिक काल बीत गया है, बाबा की उक्ति, **''जो जो जिस भाव से मुझे भजेगा। उसे मैं उसी भाव से पाऊँगा।।''** इस प्रतीति का अनुभव श्रद्धालु गण आज भी कर रहे हैं।... और इसीलिए, श्री साईं बाबा ने ही दिये हुए वचन के अनुसार श्री शिर्डी क्षेत्र में भक्त-भाविकों की चींटियों समान लम्बी कतारें लग रही हैं और उत्तरोत्तर उसमें वृद्धि होती जा रही है।...

श्री साईं बाबा का सम्पूर्ण जीवन आज-कल के तथाकथित बुवा-बाबाओं के समान, स्वामी-महाराजाओं के समान ऐश-आरामी कतई नहीं था। वे तो फटे पुराने वस्त्र ही परिधान करते थे, मन माने वहीं बैठ जाया करते थे; उनका व्यवहार भले ही पागलों समान रहा हो, पर उनमें ब्रह्माण्ड के दर्शन होते थे। इस बात के कई उदाहरण साईं बाबा के अवतार काल में ही लिपिबद्ध किये गए जो श्री साईं सत् चरित में वर्णित हैं। उनमें से कुछ घटनाओं के प्रत्यक्षदर्शी श्री साईं बाबा की महासमाधि के पश्चात् भी बहुत समय तक जीवित थे। श्री साईं सत् चरित के लेखक ने उनसे प्रत्यक्ष सम्पर्क बना कर उन अद्भुत घटनाओं का जैसा का जैसा ही वर्णन प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार श्री साईं बाबा में दैवी गुण दिखाई देने के कारण उस समय के साधु-सन्तों ने, महात्माओं ने, सत्पुरुषों ने उनके ये दैवी गुण लोगों के ध्यान में ला दिए। आध्यात्मिक अधिकार प्राप्त जानकीदास साधु ने बहुत समय तक शिर्डी में ही निवास किया था। उस दरमियान कई बार उनकी साईं बाबा के साथ बैठकें होती रहती थीं। साईं बाबा को पानी भरते देख कर ब्रह्मचर्याश्रमी वैष्णववीर गंगागीर बाबा ने गाँव वालों से कहा था कि, **''धन्य शिर्डी का भाग्य वरिष्ठ। प्राप्त हुआ श्रेष्ठ यह रत्न।। आज यह काँधे से ढोये पानी। पर जीव यह सामान्य नहीं। इस भूमि का पुण्य है खास। इसीलिए पधरा है यह यहाँ।।''** अक्कलकोट स्वामी के महाप्रसिद्ध शिष्य आनंदनाथ महाराज ने साईं बाबा को सामने देखते ही कहा कि, **''हीरा है यह, प्रत्यक्ष में हीरा।''** इसी तरह दत्तावतारी व्रतधारी यति वासुदेवानंद सरस्वती ने, जब साईं भक्त वकील पुण्डलिक राव नांदेडकर उनके दर्शन करने गये थे तब शिर्डी के बारे में चल रही बातचीत के दौरान साईं नाम का उल्लेख होते ही स्वामी ने अपने दोनों हाथ जोड़ कर साईं बाबा को प्रणाम किया और उन्हें अर्पण करने हेतु पुण्डलीक राव को एक नारियल भी दिया।... ऐसा होने पर भी साईं बाबा ने कभी भी अपने आपको देवता, ईश्वर (अनलहक्क) कहा नहीं; वे स्वयं को अल्लाह का बंदा (यादे हक्क) ही कहा करते थे।...

बाबा ने गुरु की महिमा बता कर गुरु की कसौटी पर किस तरह उतरना है, यह ख़ुद के उदाहरण से दिखा दिया है। लेकिन उन्होंने ख़ुद किसी को भी अपना शिष्य नहीं बनाया। 'मैं कान में फूँकने वाला गुरु नहीं हूँ,' ऐसा ही वे कहा करते थे। आगे चल कर केवल भक्तों का मन रखने के लिए वे -

''स्वयं यद्यपि निर्विकार। अंगीकारते पूजा-उपचार। भक्त भावार्थानुसार। प्रकार सभी स्वीकार करते।। कोई करता चामरांदोलन। कोई तालवृन्त-परिवीजन। ढोल शहनाई मंगल वादन। कोई समर्पण करते पूजा। कोई हस्त-पाद प्रक्षालन। करता कोई इत्र-गंधार्चन। कोई त्रयोदशगुणी तांबूलदान। महानैवेद्य निवेदन करते।। आड़ा तिलक कोई दो अंगुलियों से लगाते। शिवलिंग को जैसे सलंग चर्चते। कोई कस्तूरी मिश्रित सुगंध चर्चते। वैसे ही चर्चते चंदन।।...'' परन्तु, तात्या साहेब नूलकर के एक स्नेही डाक्टर जो राम के कट्टर भक्त थे और बाबा को मुसलमान मानते थे, उन्हें उनके गुरु धोपेश्वरी के रघुनाथ उर्फ काका पुराणिक के रूप में दर्शन देने तक बाबा किसी को भी अपने भाल पर तिलक लगाने नहीं देते थे। इसी प्रकार शिर्डी के सभी ग्राम देवताओं का पूजन-अर्चन हुए बगैर बाबा अपनी पूजा करने नहीं देते थे।

बाबा ने भले ही किसी को कभी अपना शिष्य नहीं बनाया; फिर भी बाबा की उक्ति, कृति तथा उनके दिये अनुभव से कुछ ना कुछ सीख मिलती रहने के कारण भक्त उन्हें गुरु मानते हैं।

निर्गुण से सगुण में अवतरित हुये और फिर से निर्गुण में समा गये साईं समय समय पर अपने चैतन्य की प्रतीति अनुभवों द्वारा देते रहते हैं; इसीलिए अपने भक्तों के लिए वे भगवान् भी हैं और गुरु भी!...

❍❍❍

Shri Krishna and Shirdi Sai Baba are really Non-Different and act exactly alike…

O Sai! Govardhan, a very famous place of Hindu pilgrimage, is located 26 km west of Mathura (154 km from New Delhi) on the state highway to Deeg (a town and a municipality in Bharatpur district in the state of Rajasthan, India). Govardhan is located on a narrow sandstone hill known as Giriraj which is about 8 km in length.

The legends in Vishnu Puran have it that the people of Gokul used to worship and offer prayer to Lord Indra; because they believed that it was he who sent rains for their welfare. But, Lord Krishna told them that it was Mount Govardhan and not Lord Indra who caused rains; therefore, they should worship the former and not the latter. People did the same; and it made Lord Indra so furious that the people of Gokul had to face very heavy rains as a result of his anger. Then, Lord Krishna came forward to ensure their security; and after performing worship and offering prayers to Mount Govardhan, lifted the Govardhan hill up with His little finger and held it like an umbrella for 7 days to protect the people and the cattle of Vrindavan from the torrential rain.

O Baba! It must have been still fresh to Your mind that, one evening there was one of the most terrific storms that were ever experienced in Shirdi, and the entire village was flooded with incessant rains. The many local deities and nature gods were sought to be appeased, but in vain. At last people came to You with the prayer to quell the storm. You calmly came out to the edge of the Dwarkamai - *Masjid*, saying, "Stop! Calm your fury!", and ordered the storm to cease its rage. Lo, within a few moments, the clouds passed away and things returned to normal. (Shri Sai Sat Charita, Chapter XI)

Thus, O Sai! You guarded the people and the cattle of Shirdi from the hammering rains and terrific storm.

Shri Krishna and Shirdi Sai Baba are really Non-Different and act exactly alike…

O Sai! You are Omniscient. You know very well that King Parikshit once entered the hut of a sage named Samika as he was thirsty. He found

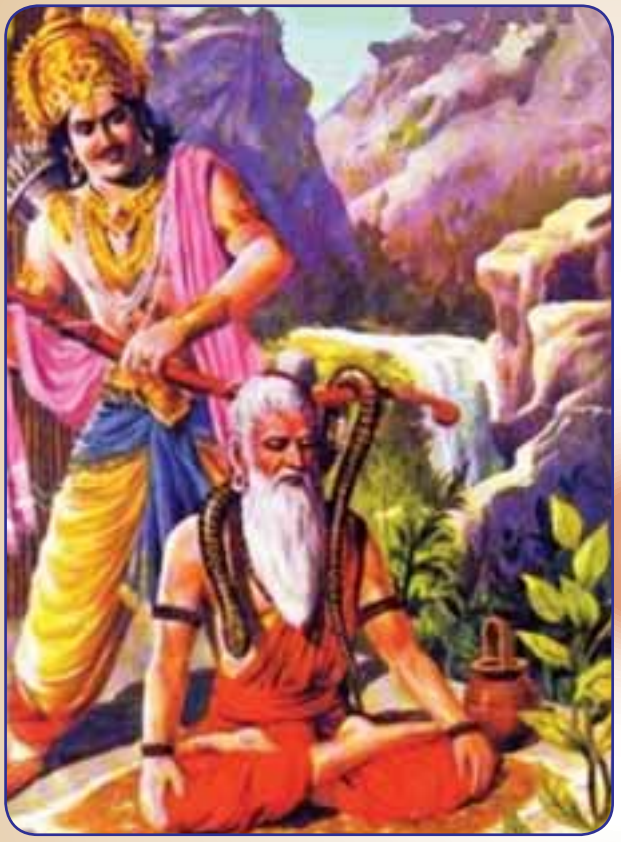

the sage in deep meditation. He bowed to him several times. But, as there was no response, he took a dead snake and threw it around the sage's neck. Later when the sage's son Shringi heard of this incident, he cursed the king to die of snake bite on the 7th day.

On hearing this, the king forswore the throne for his son Janamejay and spent his last 7 days listening to the discourses of the great sage Sukadev Goswami, compiled as the Bhagavat Puran (Shrimad Bhagavatam), under the banyan tree at Shukratal.

After hearing all that was narrated to him by Sukadev Goswami, Maharaj Parikshit spoke as follows,

"My Lord, I now have no fear of Takshak or any other living being, or even of repeated deaths; because I have absorbed myself in that purely spiritual Absolute Truth, which you have revealed and which destroys all fear."

King Parikshit then sat down on the bank of the Ganges, upon a seat made of *darbha* grass with the tips of its stalks facing east, and turned

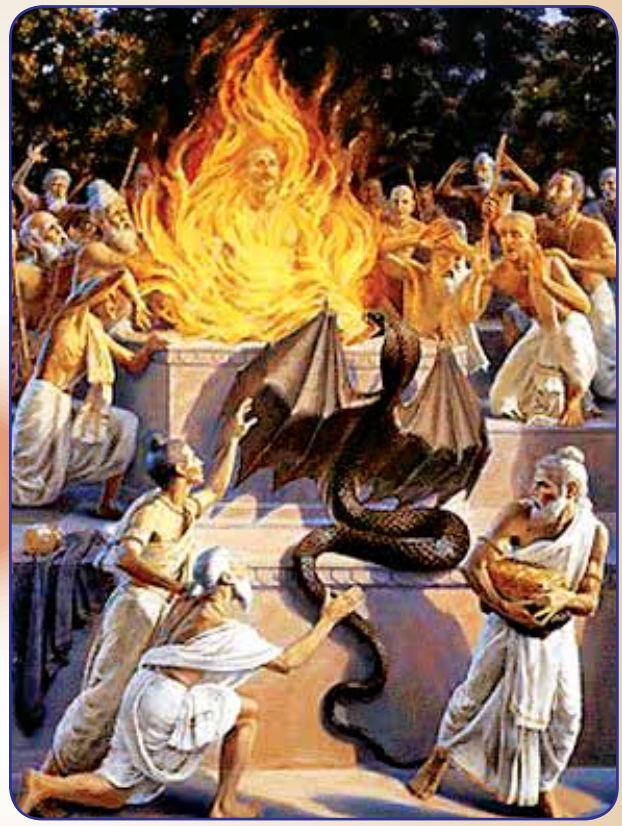

himself toward the north. He experienced full self-realization and was free of material attachment and doubt.

As prophesied, the winged snake Takshak went flying toward the King Parikshit on the 7th day, and bit him. King Parikshit left his mortal remains behind and attained *Moksha*.

Here, the readers might well ask : 'Why the King Parikshit had to die even after hearing sacred Shrimad Bhagavatam. Why didn't the Almighty Lord Krishna exercise His powers to save King Parikshit from the snake bite, when the latter was so devoted to the former?'

This inquisitiveness might probably be quite genuinely wise. But, the following fact will definitely serve as a convincing answer.

The same Supreme Lord Krishna had earlier

protected Parikshit, by entering into the womb of his mother Uttara from the fiery weapon released by Ashwathama. (Mahabharata, Book 10 : Sauptika Parva, Chapter 16)

This time the Lord didn't, because as narrated above : After hearing all that was narrated to him by Sukadev Goswami, Maharaj Parikshit had no fear of Takshak or any other living being, or even of repeated deaths, because he had absorbed himself in that purely spiritual Absolute Truth, which Sukadev Goswami had revealed and which destroyed all fear.

Now, Maharaj Parikshit wanted to live no more; he wanted to achieve *Moksha* (salvation).

O Sai! Had Parikshit wished to survive the venomous snake bite, Lord Krishna would have undoubtedly saved him, in exactly the same way as You had counteracted poison after one of Your devotees Shama was bit by a deadly snake. Your act of raining down mercy on Shama is beautifully illustrated in Shri Sai Sat Charita, Chapter XXIII

Madhavrao Deshpande alias Shama was one of Your staunch devotees. He was once bitten by a snake. The poison soon started

Shri Sai Sat Charita, Chapter XXIII

spreading into his entire body, causing severe pain. He came rushing to seek Your aid. No sooner did he start climbing the steps up of the Dwarkamai - *Masjid* than You shouted, "Damn fool! Be alert! Do not climb up! Get down the stairs of the Masjid! Get thee hence, satan!"

Shama naturally felt disturbed and evidently got confused on receipt of such kind of harsh reception from You. But, it wasn't too late, and a controlled cool down soon followed. Subsequently, You invited Shama to climb up the steps of the Dwarkamai and lovingly offered him a seat by Your side. You then, with motherly

affection, consoled Shama thus : "My dear child! Don't worry. Be mindful of *Allah*, and *Allah* will protect you. Go to your house and eat as per your likes. Keep moving around without lying down, and sacrifice tonight's sleep."

O Baba! It's needless to say that Your instructions were complied with without any ifs and buts, and Shama soon regained his health.

The truth of the situation was that the initial unwelcome words uttered by You were not meant for Shama, but were aimed at the toxic poison as an instructive warning to refrain it from spreading through Shama's body.

O Sai! You granted Shama additional years of life; because he, unlike Parikshit, didn't want to die, but longed to survive the snake bite. Lo! By Your blessings, he outlived You, and died only in the year 1939 i.e. 21 years after Your taking *Mahasamadhi* in the year 1918.

Shri Krishna and Shirdi Sai Baba are really Non-Different and act exactly alike…

O Sai! In the holy month of Kartik (In the reformed Indian national civil calendar, Kartik is the eighth month of the year),

thousands of devotees perform the *parikrama* (circumambulation) of Giriraj Govardhan, reveling in the joyful, transcendental atmosphere of Govardhan. They walk barefoot the 23 km path around Govardhan, or perform *dandavat parikrama* i.e. prostrating circumambulation (*dandavat parikrama* is performed by standing in one spot, offering obeisance like a stick (*danda*) by lying flat on the ground and then continuing, contiguously, till the entire route is covered.), which may take weeks, chanting the Lord's name and glorifying Giriraj Govardhan praying for pure loving devotion unto the Lotus Feet of Shri Shri Radha Girdhari.

O Baba! It would certainly delight my fellow Sai devotees to know that when Chaitanya Mahaprabhu did *parikrama* (circumambulation) of Govardhan Hill while visiting Vrindavan in 1515 AD, he did not walk on the hill; because he considered Govardhan as non-different from Lord Krishna.

O Sai! The identity of Krishna and Govardhan Hill is still honoured, and great devotees take rocks from Govardhan Hill and worship them exactly as they worship the Deity of Krishna in the temples, considering Govardhan as non-different from Krishna. The form of Krishna who began to eat the offerings was separately constituted, and Krishna Himself along with other inhabitants of Vrindavan began to offer obeisance to the Deity as well as Govardhan Hill. In offering obeisance to the huge form of Krishna Himself and Govardhan Hill, Krishna declared, "Just see how Govardhan Hill has assumed this huge form and is favouring us by accepting all the offerings." Krishna also declared at that meeting, "One who neglects the worship of Govardhan *Pooja*, as I am personally conducting it, will not be happy. There are many snakes on Govardhan Hill, and persons neglecting the prescribed duty of Govardhan *Pooja* will be bitten by these snakes and killed. In order to assure the good fortune of the cows and themselves, all people of Vrindavan near Govardhan must worship the hill, as prescribed by me."

O Baba! Krishna's prescription as safeguard against snake bite reminds me of Your oft-repeated words : "This is our Dwarkamai... She wards off all dangers and anxieties of its children. This *Masjidmai* (its Presiding Deity) is very merciful; she is the mother of all devotees, whom she will save in times of calamities. Once a person sits on its lap, all his troubles are over. He, who rests in her shade, gets bliss." (Shri Sai

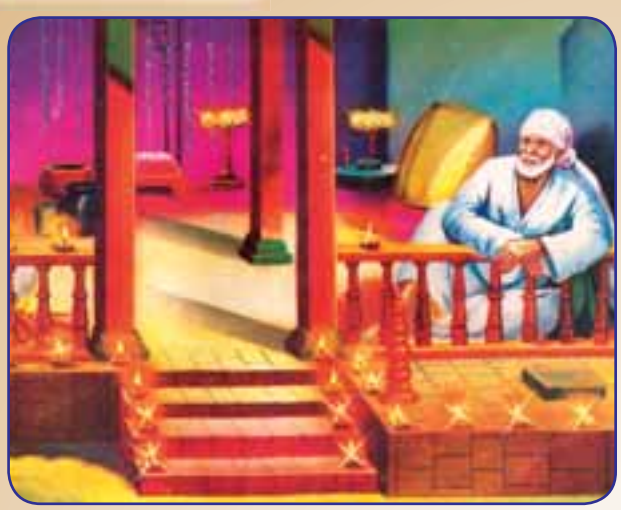

Sat Charita, Chapter XXII)

The numerous stories, related with Balasaheb Mirikar, Bapusaheb Booty, Amir Shakkar and Hemadpant that are narrated in Shri Sai Sat Charita, Chapter XXII, serve as testimony to these words of Yours : "The snake is so terrible, but what it can do to the children of Dwarkamai! When Dwarkamai (the Presiding Deity) protects, how the serpent can harm!"

Govardhan Hill and Dwarkamai are really non-different and protect exactly alike… Shri Krishna and Shirdi Sai Baba are really Non-Different and act exactly alike…

O Sai! Although Arjun was considered a man of wisdom properly raised and educated in the Vedic culture, still illusion had entered his consciousness. Hence Lord Krishna had to teach him.

Lord Krishna instructs Arjun to fall at the feet of self-realised beings, rendering service to them with faith and devotion, and inquire from them with a pure heart about the purpose of life, the true nature of a living being and how to revive one's relationship with the Supreme Being :

Tat viddhi pranipatena
pariprashnena sevaya I
Upadekshyanti te gyanam
gyaninah tattva darshinah II

(Bhagvad Gita - Chapter 4, *Shlok* 34)

(Just try to learn the truth by approaching a spiritual master. Inquire from him submissively and render service unto him. The self-realized

Illustrations based on the stories narrated in Shri Sai Sat Charita, Chapter XXII

soul can impart knowledge unto you, because he has seen the truth.)

O Baba! It wasn't a surprise to see You enacting the same role of Lord Krishna before one of Your devotees Nanasaheb Chandorkar, while - one day - the latter was tenderly massaging Your legs in the Dwarkamai-*Masjid*, and was mumbling the above 34th *shlok* from the 4th Chapter of the Bhagvad Gita with perfect pronunciation.

Although Nanasaheb Chandorkar was a great scholar of Vedant and Sanskrit, still his *vidya vasana* was very powerful. The concept of 'I am a learned man', 'I know all the *vedas*', 'I must consider everything in my own style and cannot accept somebody else's dictum' are all *vidya vasana* traces, and all of them are fatal to one's chance of attaining *Mukti*.

So, O Baba! You, like Lord Krishna, had to teach him the true purport of the above 34th *shlok* from the 4th Chapter of the Bhagvad Gita. (Shri Sai Sat Charita, Chapter XXXIX)

Shri Krishna and Shirdi Sai Baba are really Non-Different and act exactly alike…

Baba appeared several times as Lord Krishna to Bapusaheb Booty who constructed Baba's *Samadhi Mandir*. As per Baba's desire, Baba's holy body was placed and preserved in the central shrine meant for Murlidhar/Lord Krishna and Baba Himself became Murlidhar and the Bootywada became the *Samadhi Mandir* of Sai Baba. Baba Himself named His

Masjid as Dwarkamai, and Dwarkamai proved to be perfectly the abode of Lord Krishna, Who is none other than Baba Himself in His present Manifestation.

O Sai! Lord Balaram expands into the great serpent known as Anant, or Sheshanag. He reposes on the causal ocean and serves as the couch upon whom Lord Maha Vishnu reclines. (Brahma-samhita, 5.47) That Anant Shesha is the devotee incarnation of God who knows nothing, but service to Lord Krishna. With His thousands of mouths, He always sings the endless glories of Lord Krishna. He also expands himself to serve as Lord Krishna's paraphernalia, including such items as the umbrella, slippers, bedding, pillow, garments, resting chair, residence, sacred Gayatri thread, and throne in the pastimes of Lord Krishna. (Chaitanya Charitamrit, Madhya Lila, 5.120-124)

I bow down to the Omnipotent Supreme Lords Shri Krishna and Shirdi Sai Baba, the Embodiments of Supreme Bliss, Who by Their own mouths expressed what had been uttered with dexterity by Anant Shesha's thousands of mouths.

- Dr. Subodh Agarwal
'Shirdi Sai Dham',
29, Tilak Road, Dehra Dun - 248 001,
Uttarakhand.
Mobile : **(0)9897202810**
Tel. & Fax : **0135-2622810**
E-mail : **subodhagarwal27@gmail.com**

सद्गुरु श्री साईं नाथ
– धरा तल पर अद्भुत अवतरण

स सर्वविद् भजति मां सर्वभावेन भारत

मुझे अपनी शैशवावस्था व बाल्यावस्था में अपनी माँ के हाथ का बना हुआ खाना अत्यन्त स्वादिष्ट व रुचिकर लगता। ऐसा क्यों, यह बात मेरी समझ में बहुत देर बाद आयी। वे मुझे दस वर्ष की आयु में ही बिलखता छोड़ कर परलोक सिधार गयीं। उसके बाद मिश्राणी, ब्राह्मणी जो भी हमारे घर खाना बनाती, उनके हाथ का बना खाना न तो मुझे रुचिकर होता और न स्वादिष्ट लगता। मैं उसमें सौ मीनमेख निकालता रहता – नुक्ताचीनी करता रहता।

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में पुरुषोत्तम योग के लिए – उन्हें प्राप्त करने के लिए तीन साधन मार्ग बताये हैं – कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग। परन्तु, मेरी दृष्टि में ये तीनों ही पृथक्–पृथक् नहीं किये जा सकते। ये तीनों मिल कर एक ही अभीष्ट परिणाम देते हैं।

हम यहाँ एक रसोइये का उदाहरण लेंगे – वह पाकशास्त्र में निपुण है, अर्थात् उसे भोजन बनाने का ठीक से **ज्ञान** है। वह रसोई तैयार करने के लिए **कर्म** – परिश्रम भी करता है – भीषण गर्मी में भी चूल्हे के सामने, भट्टी के सामने बैठ कर स्वेद बहाते हुए तपता भी है; परन्तु यदि उसमें उन लोगों के प्रति, जिनके लिए वह खाना बना रहा है, प्रेम – **भक्ति** नहीं है, तो जिन रोटियों को, पुड़ियों को वह बेल रहा है, वे टेढ़ी–मेढ़ी, मोटी–झोटी बन जायेंगी, कच्ची–पक्की रह जायेंगी। शाक में नमक–मिर्च न्यूनाधिक हो जायेगा। तैय्यार भोजन स्वाद हीन होगा। कर्म में यदि मन न हो, आत्मा न हो, तो वह कर्म भार सा हो जायेगा और उसका परिणाम (फल) अरुचिकर होगा – आनंद दायक नहीं होगा। और, यदि उसमें यह भावना है कि जिनके लिए मैं भोजन तैयार कर रहा हूँ वे मेरे ही साथी हैं, मेरे ही परिवार के सदस्य हैं, मेरे द्वारा बनाया गया भोजन उनके लिए रुचिकर हो, स्वादिष्ट हो, उनके लिए तुष्टि–पुष्टि दायक हो, तो उसके द्वारा बनाया गया भोजन कितना रुचिकर होगा, स्वादिष्ट होगा, तुष्टि–पुष्टि दायक होगा? इससे यह सिद्ध होता है कि किसी भी काम को सफल बनाने के लिए कर्म, ज्ञान और भक्ति तीनों की आवश्यकता होती है। माँ के द्वारा बनाये गये भोजन में इन तीनों बातों का समावेश होता था, वह उसमें अपना वात्सल्य उँडेलती थी। उसके द्वारा मनुहार के साथ प्रेम पूर्वक परोसा गया साधारण भोजन भी अत्यन्त स्वादिष्ट लगता और वह भोजन वस्तुतः परमेश्वरीय प्रसाद ही होता था।

वे लोग बड़े अभागे हैं जो अपने घर पर अपनी माँ/धर्मपत्नी के हाथ का मन से, आत्मा से बनाया हुआ शुद्ध, पवित्र, तुष्टि–पुष्टि दायक भोजन छोड़ कर होटलों में खाते फिरते हैं। अब तो छोटे–बड़े शहरों में यह एक तरह का प्रचलन, फैशन ही बनता जा रहा है कि तथाकथित सम्भ्रान्त जन सप्ताह/पखवाड़े में एक बार किसी रेस्टोरेण्ट/होटल में जाकर लंच या डिनर अवश्य लेंगे, चाहे वहाँ बेमन से पकाया गया और बासी, अशुद्ध, अपवित्र, राजसी, तामसी भोजन ही क्यों न परोसा जाये। ऐसे भोजन को करके मनुष्य में राजसी, तामसी प्रवृत्तियाँ तो बढ़ेंगी ही, वे रुग्ण भी होंगे।

जबकि आचार्य विनोबा भावे तो यहाँ तक कहते हैं कि जो यज्ञोपयोगी आहार है, उसे ही सात्त्विक और यज्ञ रूप बना कर ग्रहण करें।

खेती–बाड़ी में एक कहावत है – 'गहरा बो, पर गीला बो।' खेत को जितना अधिक गहरा जोत कर, बीज गहराई में बोयेंगे, उतना ही बीज गहरा जमेगा और अधिक फलेगा। कर्म गहरा, अर्थात् उत्कृष्ट होना चाहिए। पर, नीचे तरी भी होनी चाहिए। अच्छी फसल के लिए गहराई

और तरी दोनों आवश्यक हैं। कर्म में तरी से आशय प्रेम और भक्ति दोनों से है। जो कर्म हम जिसके लिए कर रहे हैं वह परिश्रम पूर्वक तो हो ही, उसमें हमारी निष्ठा और प्रेम भी हो। ऐसा करने पर कर्म का बोझ भी मालूम नहीं होगा। हम काम करके भी अकर्ता बने रहेंगे।

शुद्ध, सात्त्विक कर्म कैसा भी क्षुद्र क्यों न हो, उसमें ईमानदारी, निष्ठा एवं समर्पण होना चाहिए। कर्मयोगियों के परमेश्वर श्री कृष्ण तो युद्ध के पश्चात् घोड़ों को खरहरा करते हैं, प्रेम से उनके पुट्ठे, पीठ सहलाते हैं और अपने पीताम्बर में उनको दाना–रातिब खिलाते हैं। राजसूय यज्ञ के समय जूठी पत्तलें उठाते हैं। जंगल में धेनु चराने जाते हैं। और स्वयं सन्तों को ही देखिये – कोई कसाई का, कोई दर्ज़ी का, कोई कुम्हार का, कोई जुलाहे का, कोई माली का, कोई मोची का, कोई बनिये का, तो कोई नाई का काम करते–करते भगवान् को प्राप्त हो गये – मुक्तावस्था को प्राप्त हो गये। **भगवान् आपके काम में मात्र निष्ठा, ईमानदारी और सच्ची लगन देखते हैं और इनके साथ–साथ प्रभु–स्मरण हो, भक्ति की आर्द्रता हो, तो कहना ही क्या – ऐसे जन के तो लोक, परलोक दोनों ही सुधर गये।**

कर्म की गति बड़ी गहन है। क्षुद्र विषयों में ही हमारा चित्त, मन डूबा रहता है। सन्त तुकाराम कहते हैं –

''कथा पुराण ऐकतां। झोंपें नाडिलें तत्त्वतां।
खाटेवरी पडतां। व्यापी चिंता तळमळ।
ऐसी गहन कर्मगति। काय तयासी रडती।।''

– कथा–पुराण श्रवण करने जाते हैं, तो निद्रा सताती है और बिस्तर पर लेटते हैं, तो चिन्ता और बेचैनी रहती है। ऐसी कर्म की गहन गति है। क्या किया जाये?

आज–कल के कमाऊ बाबा लोगों ने तथाकथित आश्रम स्थापित करके कई प्रकार की ध्यान पद्धतियाँ चला रखी हैं। वे कहते हैं – आँखें मूँद कर आसन लगा कर बैठ जाओ। अरे भाई! कोरी आँखें बंद कर आसन लगा कर बैठ जाने से क्या हासिल होगा? यह मन तो बड़ा चंचल है, प्रमाथी है। श्री कृष्ण के परम सखा महारथी अर्जुन भी कहते हैं –

''चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।''

– गीता, ६.३४

– हे श्री कृष्ण! यह मन बड़ा चंचल, प्रमथन स्वभाव वाला, बड़ा दृढ़ और बलवान् है। इसलिए उसका वश में करना मैं वायु को रोकने की भाँति अत्यन्त दुष्कर मानता हूँ।

मन की एकाग्रता के लिए बाह्य पदार्थों, वस्तुओं–विषयों का चिन्तन छूटना आवश्यक है। मन का निर्मल, पवित्र, शुद्ध होना आवश्यक है – **'निर्मल जन सो मोहि पावा।'**

आज की चकाचौंध भरी एवं विलासिता से पूर्ण ज़िंदगी में मनुष्य वस्तुओं का अम्बार लगाता जाता है। एक कोठी से, एक कार से पेट नहीं भरता; अधिक से अधिक चाहिए। जब तक जीवन की परिमितता नहीं होगी, सब काम नपा–तुला नहीं होगा, मन की चंचलता बढ़ती रहेगी।

पहले चित्त भरमाने के लिए एक सिनेमा हुआ करता था, थिएटर, खेल–तमाशे, नौटंकी हुआ करती थी; पर अब तो घर–घर में टी.वी. है, डी.वी.डी. प्लेयर है, कम्प्यूटर है और उसके साथ इण्टरनेट है। जब मरज़ी हो, बटन घुमाओ और मन का चापल्य बढ़ाओ, अपनी दृष्टि को दूषित करो। अब तो टी.वी. में अन्य चैनलों की तो बात छोड़िए, समाचार चैनलों, धार्मिक चैनलों तक पर विज्ञापनों में बीच–बीच में ऐसे अश्लील, भद्दे दृश्य दिखाये जाने लगे हैं कि परिवार के साथ बैठ कर देखने में लज्जा–संकोच होता है। अच्छे–अच्छों को झुरझुरी–कम्पन होने लगता है। इन्हीं के कारण व्यभिचार – इन्द्रियलोलुपता, कामोपभोगपरायणता, बलात्कार आदि आसुरी प्रवृत्तियों का प्रसार मानव समाज में बड़े जोरों से हो रहा है। बालक, बालिकाओं, किशोरों, युवक, युवतियों को इन सबसे कैसे बचाया जावे? राष्ट्र के सम्मुख यह एक ज्वलन्त प्रश्न है। इन्हीं का दुष्परिणाम है कि आज के समाचार पत्र बाल–अपराधों, बलात्कारों, कत्ल – हत्या के समाचारों से ही भरे रहते हैं। **'जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि'**।

यहाँ एक प्रसंग याद आ रहा है – हनुमान जी महाराज जहाँ–जहाँ राम कथा होती है, उसे सुनने के लिए प्रच्छन्न रूप से आ विराजते हैं –

''यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं
तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।

वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं
मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ।।''

''रामदास रामायण लिखते जाते और शिष्यों को पढ़ कर सुनाते जाते थे। समर्थ रामदास ने लिखा था – 'हनुमान अशोक वन में गये। वहाँ उन्होंने सफ़ेद फूल देखे।' यह सुनते ही वहाँ झट से हनुमान प्रकट हो गये और बोले, 'मैंने सफ़ेद फूल नहीं देखे, लाल देखे थे। तुमने गलत लिखा है। उसे सुधार लो।' समर्थ ने कहा, 'मैंने ठीक लिखा है। तुमने सफ़ेद फूल ही देखे थे।' हनुमान ने कहा, 'मैं स्वतः वहाँ गया था और मैं ही झूठा?' अन्त में झगड़ा श्री रामचन्द्र जी के पास गया। उन्होंने कहा, 'फूल तो सफ़ेद ही थे, परन्तु हनुमान की आँखें क्रोध से लाल हो रही थीं; इसलिए वे शुभ्र फूल उन्हें लाल दिखाई दिये।' **इस मधुर कथा का आशय यही है कि संसार की ओर देखने की जैसी हमारी दृष्टि होगी, संसार भी हमें वैसा ही दिखाई देगा।**'' – विनोबा भावे

उक्त लिखित अर्जुन के प्रश्न का उत्तर देते हुए भगवान् कृष्ण कहते हैं –

''असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ।।''

– गीता ६.३५

हे महाबाहो अर्जुन! निःसंदेह मन चंचल और कठिनता से वश में होने वाला है; परन्तु हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! यह **अभ्यास और वैराग्य** से वश में होता है।

अभ्यास : भगवान् के नाम, लीला और गुणों का श्रवण, कीर्तन, मनन, नाम-जप तथा शास्त्रों का पठन-पाठन और उनके चरितों का यथाश्रुत, यथामति लेखन बारम्बार करने का नाम अभ्यास है।

मैंने कई महात्माओं, सन्तों को देखा है कि वे कहीं भी हों, किन्हीं भी परिस्थितियों में हों, उनके कर में सुमरनी हमेशा फिरती रहती है और मुख में हरिनाम रहता है। एक बार हवाई यात्रा के दौरान एक सन्त से उनके निकट बैठे एक पाश्चात्य सहयात्री ने आपत्ति की, ''आप यात्रा में भी सुमरनी हाथ में लिये हुए हैं और बातें भी करते जा रहे हैं, यह तो कोई भगवत्-स्मरण नहीं हुआ – इससे क्या लाभ?'' सन्त ने मुस्करा कर उत्तर दिया, ''यह सुमरनी मुझे सम्बल प्रदान करते हुए इस बात का हमेशा एहसास कराती रहती है कि मेरे परमात्मा मेरे साथ ही हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे किसी बंदूकधारी/पिस्टलधारी को स्वरक्षा हेतु उस बंदूक/पिस्टल का बल रहता है।''

वैराग्य : लोग वैराग्य का अर्थ लंगोटी लगा कर अथवा दिगम्बर होकर एकान्त में अथवा वन में वास करने से लगाते हैं; परन्तु 'परम' का साक्षात्कार किये बिना वासना मनुष्य का वहाँ भी पीछा नहीं छोड़ती। इन्द्रियों के विषयों के सेवन से तो वह अपने आपको रोक लेता है, परन्तु वह मन ही मन उनका रस लेता रहता है – उनका आस्वादन करता रहता है – **'रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते।'** परन्तु, ब्रह्म – परमात्मा का साक्षात्कार होने पर उसकी मन की वासना भी समाप्त हो जाती है।

वैराग्य अर्थात् सांसारिक वासनाओं व इच्छाओं का अभाव, सांसारिक बन्धनों से उदासीनता, विरक्ति।

भगवान् श्री कृष्ण ने श्रीमद् भगवद्गीता में कहा है –

''विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ।''

– २.५९

– इन्द्रियों के द्वारा विषयों को ग्रहण न करने वाले पुरुष के भी केवल विषय तो निवृत्त हो जाते हैं, परन्तु उनमें रहने वाली आसक्ति निवृत्त नहीं होती। स्थितप्रज्ञ पुरुष की तो आसक्ति भी परमात्मा का साक्षात्कार करके निवृत्त हो जाती है।

सीधे-सादे शब्दों में हम 'वैराग्य' का अर्थ समझें – किसान खेत में अपनी फसल की बढ़वार (growth), अच्छी उपज के लिए उसमें उगी हुई खर-पतवार, घास-फूस को उखाड़ फेंकता है। हमारे मन में भी जो षड् रिपु – काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, ईर्ष्या (द्वेष) – अपनी जड़ें जमाये बैठे हैं, पहले हमें उनको उखाड़ फेंकना होगा। हमारा मन जब निर्मल होगा, तभी हम वैराग्य की ओर अग्रसर हो सकेंगे।

चित्त की शुद्धि के लिए, मन को निर्मल, स्वच्छ बनाने के लिए शास्त्रों में कई साधन बताये गये हैं – जप-तप, ध्यान-धारणा, यज्ञ, दान आदि-आदि। परन्तु, सब में मुख्य और श्रेष्ठ उपाय है – **भगवान् की भक्ति**।

(पृष्ठ १५ पर)

गुरु पूर्णिमा

मनुष्य के स्वभाव को संयम, नियंत्रण और वैराग्य से आच्छादित करने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। एक सच्चा गुरु ब्रह्मानंद का मूर्ति रूप ही है। यह ब्रह्मानंद ही ज्ञानातीत आनंद है। अपने अहंकार पर विजय पाने वाला ही सच्चा गुरु है। गुरु सर्वोच्च अपरिवर्तनशील आनंद को भोगता है और प्रदान भी करता है। शिष्य में मानसिक रूप से जीव चैतन्य शक्ति को जागृत कर, उससे ज्ञान ज्योति को प्रज्ज्वलित करने वाला देव स्वरूप ही सच्चा गुरु है। परम पूज्य गुरुदेव श्री साईं बाबा ने अपने एक भक्त मानकर में वैराग्य को जगा कर उसे मछेन्द्रगढ़ जाकर साधना करने की आज्ञा दी। मानकर ने श्री साईं बाबा को सनातन ब्रह्म माना और सम्पूर्ण समर्पण भाव से उनकी आज्ञा का पालन किया। वहाँ पर उसमें भक्ति भाव सुदृढ़ होकर बाबा का साक्षात्कार भी प्राप्त हुआ। (श्री साईं सत् चरित, अध्याय ३१) कुछ दिन बाद वह पुनः शिर्डी आया और बाबा ने उसे सद्गति प्रदान की। इस संसार में गुरु कृपा दृष्टि से बढ़ कर अनमोल रत्न और कुछ नहीं है! ऐसे सफल गुरु–शिष्य परम्परा के उदाहरण – रामकृष्ण परमहंस – विवेकानंद, आदि शंकराचार्य – पद्मपाद, स्वामी रामतीर्थ – कबीर, धौम्य ऋषि – आरुणि, उपमन्यु हैं। ब्रह्म स्वरूप श्री साईं बाबा के भी गुरु थे। उनके सामीप्य में उन्हें अमित आनंद, ज्ञान प्राप्त हुआ था। (श्री साईं सत् चरित, अध्याय ३२) यह गुरु–शिष्य परम्परा विदेशों में भी प्रचलित थी, जैसे – सुकरात, अरस्तू, प्लेटो, जिन्होंने संसार में अपना नाम रोशन किया। वह शिष्य अत्यन्त भाग्यशाली है जिसे प्रेम स्वरूपी गुरु मिल जाए। श्री साईं सत् चरित के हर अध्याय में शिष्य गण बाबा के प्रेम से सराबोर हुए दिखाई देते हैं। पूर्वजों का कहना है कि यह भाग्य हमारे सुकृतों का ही फल है। उत्तम गुरु अपने आश्रय में आये शिष्यों के कल्मष का प्रक्षालन कर विज्ञान से उसे प्रदीप्त कर देता है। समर्थ गुरु रामदास ने शिवाजी की प्रतिष्ठा बढ़ा कर उन्हें छत्रपति शिवाजी की पदवी दिलाई। गुरु के कथनानुसार शिष्य आचरण करे, तो वह गुरु का प्रतिपाल बन जाता है। काका साहेब दीक्षित बार एट ला होने पर भी सम्पूर्ण समर्पण भाव से बाबा की आज्ञानुसार ही केस लिया करते थे, प्रेम – निष्ठा से बाबा के वचनों का पालन करते थे। बाबा ने भी उनका उद्धार उसी प्रकार किया जैसे कि विमान में बिठा कर स्वर्ग पहुँचा आये हो! (श्री साईं सत् चरित, अध्याय २३) इसीलिए गुरु का स्थान कैवल्यम् कहा जाता है। गुरु शिष्य का अनुबंध ज्ञान, विवेक, विज्ञान का मिश्रण है। गुरु से ज्ञान प्राप्त करने वाले शिष्य में गुरु पर विश्वास, कर्तव्य के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए, जैसे बाबा की सेवा मेघा, नूलकर और खापर्डे ने की।

हम आषाढ़ पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा या व्यास पूर्णिमा के नाम से मनाते हैं। इस दिन की गुरु पूजा का अर्थ है – हर गुरु वेद व्यास के रूप में हमारा मार्गदर्शन करे। भगवान् श्री विष्णु ने ही वेद व्यास के रुप में अपना १९वाँ अवतार लिया और वे व्यास भगवान् कहलाये। विष्णुसहस्रनाम के पूर्व संकल्प में **''वेदव्यासो भगवान ऋषिः''** कहा गया है। उन्होंने कई महाऋषियों, तपस्वियों के ब्रह्मसूत्र प्रवचनों को संचित कर दृढ़ीकृत किया, वेदों को चार भागों में विभाजित किया, वेदांग, उपनिषद, महाभारत, भागवत अष्टादश पुराणों को मानव जाति को समर्पित किया। श्री साईं बाबा ने अपने भक्त शामा को विष्णुसहस्रनाम की महत्ता बता कर उन नामों का बोध कराया और वे उनसे पढ़वा लिए। (श्री साईं सत् चरित, अध्याय २७) श्री कृष्ण भगवान् को ही श्रोता–सा बनाये व्यास भगवान् कितनी उन्नत स्थिति को प्राप्त हुए थे, वह अवर्णनीय है। समस्त उपनिषद् सार, योगसाधना, भक्ति–ज्ञान–वैराग्य के संपुटों के परमार्द्ध को बोध कराने वाली श्रीमद् भगवद्गीता की रचना भी उन्होंने ही की। विष्णुसहस्रनाम में उपदेशक व्यास महर्षि और श्रोता श्री कृष्ण बने थे। शास्त्र, ज्ञान के आध्यात्मिक स्वरूप का क्रमबद्धिकरण कर भारतीय हिंदू संस्कृति की जो सेवा उन्होंने की, वह अद्वितीय है। वेद, उपनिषद् का सार श्रीमद् भगवद्गीता का प्रबोध करने वाले परमाचार्य श्री कृष्ण भगवान् सांदीपनी महामुनि के पास अहंकार को त्याग निगूढ़ विषयों को सीखने शिष्य बन कर गये। बाण शैय्या पर लेटे भीष्म पितामह के पास राजकीय धर्मसूत्रों को सीखने युधिष्ठिर गये। गुरु के वचन को जो शिष्य अपना अस्तित्व बना ले, वह ही सच्चा शिष्य है। वसिष्ठ के उपदेश से ही कारण–जन्म श्री राम शक्तिवान बने। श्री दत्तात्रेय ने चौबीस जनों को अपना गुरु माना।

(पृष्ठ १५ पर)

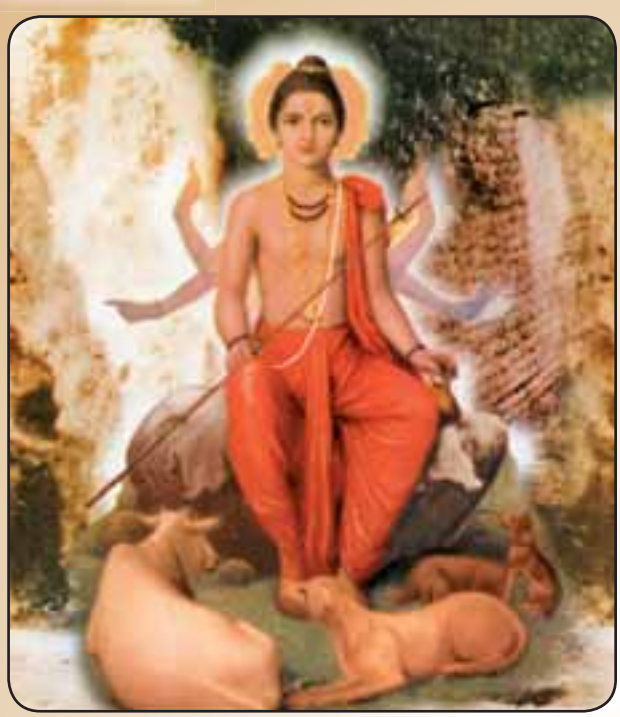

भगवान् दत्तात्रेय – भाग ४

(मई–जून २०१४ से क्रमशः)

त्रिभुवनजयी परमावधूत भगवान् दत्तात्रेय के चौबीस गुरु

भगवान् दतात्रेय ने अपना तेरहवाँ गुरु हाथी बनाया –

१३. **हाथी** – हाथी को पकड़ने के लोभी लोग एक बड़ा सा गड्ढ़ा पृथ्वी में खोद देते हैं और उसको बाँस आदि की टट्टियों से आच्छादित करके उस पर मिट्टी आदि का लेप करके कागज़, गत्तों की बनी हुई एक कृत्रिम हथिनी स्थापित कर देते हैं। कामातुर मदमत्त हाथी उसे असली हथिनी समझते हुए समागम की इच्छा से ज्योंही उसके पास जाता है, उसके बोझ से वह आच्छादन टूट जाता है और वह उस गड्ढ़े में गिर पड़ता है और बन्धन में बन्ध जाता है – **'कामान्धो नैव पश्यति।'**

''पदापि युवतीं भिक्षुर्न स्पृशेद् दारवीमपि।
स्पृशन् करीव बध्येत करिण्या अंगसंगतः।।''

– श्रीमद् भागवत, ११.८.१३

– विवेकी पुरुष को कभी भी, पैर से भी काठ की बनी हुई स्त्री का भी स्पर्श नहीं करना चाहिए। यदि वह ऐसा करेगा, तो जैसे हथिनी के अंग–संग से हाथी बन्ध जाता है, वैसे ही वह भी बन्ध जाएगा।

१४. **मधुहारी** – शहद निकालने वाला –

मधुमक्षियों द्वारा एकत्रित मधु को मधुहारी (शिकारी) छीन कर ले जाता है, इससे पहले कि वे उसका उपभोग करें। संसार के लोभी पुरुष बड़े परिश्रम से धन का संचय करते रहते हैं; पर न तो वे स्वयं उसका उपभोग करते हैं और न किसी को दान करते हैं। उनके संचित धन को उसकी टोह रखने वाला कोई अन्य ही उपभोग करता है। ऐसे ही योगी, संन्यासी भी बिना उद्यम किये ही भोग पा सकता है।

१५. **हरिण** –

जैसे हाथी स्पर्शसुख की लालसा से बन्धन में पड़ जाता है, वैसे ही हरिण का भी संगीत श्रवण की लालसा से नाश हो जाता है। वनवासी संन्यासी को कभी विषय–सम्बन्धी गीत–संगीत नहीं सुनने चाहिए।

१६. **मछली** –

मछली काँटे में लगे हुए मांस के टुकड़े को खाने के प्रलोभन से उसकी ओर लपकती है और वह काँटा उसके गले में फँस कर उसकी जान ले लेता है। जैसे जिह्वा स्वाद की लालसा मछली को मारती है, वैसे ही स्वादलोलुप मनुष्य को जिह्वा बड़ी परेशान करती है।

श्रीमद् भागवत में कहा है –

''तावज्जितेन्द्रियो न स्यात्
विजितान्येन्द्रियः पुमान्।
न जयेद् रसनं यावज्जितं सर्वं जिते रसे।।''

– ११.८.२१

– 'मनुष्य सब इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने पर भी तब तक जितेन्द्रिय नहीं हो सकता, जब तक रसनेन्द्रिय को अपने वश में नहीं कर लेता। और, यदि रसनेन्द्रिय को वश में कर लिया, तब तो मानो सभी इन्द्रियाँ वश में हो गयीं।'

दत्तात्रेय जी ने इस प्रकार शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गन्ध – इन पाँच विषयों का उल्लेख किया है।

''कुरङ्मातङ्गपतङ्गमृङ्मीना
हता पंचभिरेवपञ्च।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः
सेवते पंचभिरेवपञ्च।।''

– पतंगा, हाथी, हरिण, भ्रमर और मछली मात्र एक विषय की आसक्ति के कारण मारे जाते हैं, तो पाँचों विषयों का उपभोग करने वाला प्रमादी मनुष्य क्यों न मारा जावे?

१७. **पिंगला वेश्या** –

विदेह नगरी मिथिला में पिंगला नाम की वेश्या रहती थी। वह वस्त्राभूषणों से सज कर धनी ग्राहकों की प्रतीक्षा में अपने द्वार पर रात-रात भर खड़ी रहती थी। पर, उसके हाथ नैराश्य ही लगता था। वह बड़ी खिन्न और उदास हो गयी। एक बार उसने सोचा कि कामी पुरुषों के लिए जागने की अपेक्षा प्रभु के लिए ही जाग कर उनको ही क्यों न प्राप्त कर लूँ; और उसने विषयों का त्याग कर दिया। काम की भोगैषणा सबसे बड़ा दु:ख है।

– **''आशा हि परमं दु:खं नैराश्यं परमं सुखम्।**
यथा सञ्छिद्य कान्ताशां
सुखं सुष्वाप पिङ्गला।।''

– सचमुच, आशा ही सबसे बड़ा दु:ख है और निराशा ही सबसे बड़ा सुख है; क्योंकि पिंगला वेश्या ने जब कामी पुरुष की आशा त्याग दी (और वह भगवान् की भक्ति में लग गयी), तभी वह सुख से सो सकी।

१८. **कुरल पक्षी** –

एक बार एक कुरल पक्षी अपनी चोंच में मांस का टुकड़ा लिये उड़ा जा रहा था। दूसरे बलवान पक्षियों ने उससे मांस का टुकड़ा छीनने के लिए उसे घेर लिया और उसे चोंचे मारने लगे। जब कुरल ने मांस का टुकड़ा छोड़ दिया, तभी उसे सुख मिला।

अत: मैंने कुरल पक्षी से यह शिक्षा ली कि वस्तुओं को एकत्रित करना ही उनके दु:ख का कारण है। जो बुद्धिमान पुरुष अकिंचन भाव से रहता है, उसे अनन्त सुखस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति होती है।

१९. **अबोध बालक** –

इस जगत् में दो ही प्रकार के व्यक्ति निश्चिन्त और परमानंद में मग्न रहते हैं – एक तो भोलाभाला, निश्चेष्ट, नन्हा सा बालक और दूसरा वह पुरुष जो गुणातीत हो गया है। अत: बालक से मैंने भोलापन और निश्चिन्तता की शिक्षा ग्रहण की।

२०. **कुँआरी कन्या** –

कुँआरी कन्या मेहमान आने पर जब धान कूटने लगी, तो उसके हाथ की चूड़ियाँ आवाज़ करने लगीं, तो उसने एक-एक करके सब चूड़ियाँ उतार दीं। मैंने उससे यह शिक्षा ग्रहण की कि जब बहुत से लोग एक साथ रहते हैं तब कलह होता है। इसलिए कुमारी कन्या की चूड़ियों की तरह साधु को एकान्तवास करना चाहिए और अकेले ही विचरण करना चाहिए। श्रीमद् भागवत में कहा है –

''वासे बहूनां कलहो भवेद् वार्ता द्वयारपि।
एक एव चरेत्तस्मात् कुमार्या इव कंकण:।।''

२१. **बाण बनाने वाला** –

बाण बनाने वाला लुहार भी मेरा गुरु है। वह अपने काम में इतना दत्त चित्त रहता है कि मार्ग में शोर-शराबे की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता, चाहे राजा की सवारी ही निकल रही हो। जब लौकिक कार्य में तन्मयता के बिना सिद्धि प्राप्त नहीं होती, तब पारलौकिक कार्य में – ईश्वर-प्राप्ति में सिद्धि कैसे मिल पाएगी? ध्याता, ध्यान और ध्येय जब एकरूप हो जाते हैं, तभी परमात्मा, गुरु की प्राप्ति होती है।

२२. **सर्प** –

हे राजन्! मैंने सर्प से यह शिक्षा ली कि सर्प की तरह संन्यासी को अकेले ही विचरण करना चाहिए, उसे कभी भी संघ नहीं बनाना चाहिए। दूसरी बात, सर्प सर्वदा दूसरों के बनाये बिल आदि में ही सुख पूर्वक रहता है, वह अपने लिए कभी घर नहीं बनाता। योगी, संन्यासी को भी इस अनित्य शरीर के लिए कभी घर, मठ आदि का निर्माण नहीं करना चाहिए; क्योंकि यह सब बखेड़े की जड़ है –

'गृहारम्भोऽतिदु:खाय विफलश्चाध्रुवात्मन:।'

– श्रीमद् भागवत

तीसरी बात, आपने देखा होगा, सर्प का शरीर कितना साफ़-सुथरा, चमकीला रहता है; अत: साँप से यह शिक्षा भी मिलती है कि संन्यासी सर्वदा स्वच्छ व देदीप्यमान बना रहे।

२३. **मकड़ी** –

मकड़ी अपने मुख की लार से जाला बुनती है और उसी में विचरण करती है। उसी में वह अपने शिकार को जकड़ कर, मार कर निगल जाती है। वैसे ही परमेश्वर भी इस जगत् को अपने में से उत्पन्न करते हैं, उसमें जीव रूप से विहार करते हैं और फिर उसी में अपने को लीन कर लेते हैं। इससे मैंने यह शिक्षा ली कि वे सबके अधिष्ठान

हैं, सबके आश्रय हैं। वे एक हैं, अद्‌वितीय हैं।

२४. **भृङ्गी कीट** –

भृङ्गी एक कीड़े को ले जाकर अपने स्थान पर बंद कर देता है और उसके चारों ओर भ्रमण करते हुए गुनगुनाता रहता है। और वह कीड़ा भय से उसी का चिन्तन करते-करते तत् रूप हो जाता है। तुलसी कहते हैं – **''भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ।''** – भगवान् का नाम-जप, चिन्तन, मनन किसी भी रूप में किया जाए, भक्त तद्रूप ही हो जाता है और उन्हीं में जा मिलता है। अत: मैं हमेशा भगवान् के चिन्तन-मनन में ही मगन रहता हूँ।

भगवान् दत्तात्रेय कहते हैं, हे राजन्! इस प्रकार मैंने इतने गुरुओं से ये शिक्षाएँ ग्रहण कीं।

(क्रमश:)

– मदन गोपाल गोयल

❍❍❍

(पृष्ठ ११ से)

आज से बीस-पच्चीस वर्ष पूर्व हमारे ग्राम में नल नहीं थे। मई-जून के महीने में नदी-तालाब सूख जाते और कुओं में भी पानी बहुत कम रह जाता। परिणाम स्वरूप पानी की बड़ी किल्लत हो जाती। घर में सम्पन्नता के कारण अच्छे से अच्छा नहाने-धोने का साबुन, सोड़ा, रीठा आदि सब उपलब्ध होते, पर पानी के बिना सब बेकार। यदि ये सब न हों और मात्र पानी ही उपलब्ध हो, तो भी मल-मल के नहाया जा सकता है, कपड़ों को मसल-मसल कर स्वच्छ, उज्ज्वल किया जा सकता है।

अभिप्राय यह कि कर्म, ज्ञान, वैराग्य – सब साधन होने पर भी यदि मनुष्य में प्रेम-भक्ति रूपी आर्द्रता, जल न हो, तो सब साधन व्यर्थ। भगवान् की भक्ति हृदय में धारण करने पर ज्ञान, वैराग्य स्वत: ही आ जाते हैं। भक्ति की महिमा बताते हुए भगवान् ने श्रीमद् भागवत में अपने श्री-मुख से यहाँ तक कहा है कि –

''वाग् गद्‌गदा द्रवते यस्य चित्तं
रुदत्यभीक्ष्णं हसति क्वचिच्च।
विलज्ज उद्‌गायति नृत्यते च
मद्भक्तियुक्तो भुवनं पुनाति।।''

''मेरा नाम-गुण-कीर्तन करते समय जिसका गला भर आता है, हृदय द्रवित हो जाता है, जो बार-बार मेरे प्रेम में आँसू ढालता है, कभी हँसने लगता है, कभी लाज-शर्म छोड़ कर उच्च स्वर से गाने और नाचने लगता है, ऐसा मेरा भक्त त्रिलोकी को पवित्र कर देता है।''

(क्रमश:)

– मदन गोपाल गोयल
प्राचार्य (सेवा निवृत्त)
श्री राम अयन, इन्द्रगढ़ – ३२३ ६१३, ज़िला बूंदी, राजस्थान.
ई-मेल : gopalgoyal1963@gmail.com
संचार ध्वनि : (०)९४६०५९४८९०, ७८९१७६३८८४

❍❍❍

(पृष्ठ १२ से)

गुरु पूर्णिमा का अर्थ यह भी है कि बिना रिक्त स्थान के चन्द्रमा हो। चन्द्रमा और कुछ नहीं, हमारा मन ही है। मन पूर्ण रूप से समर्थ शक्तिवान् हो, तो प्रकाश का वितरण होगा हीं। गुरु पूर्णिमा मनाने का अर्थ गुरु को अपना प्रेम भेंट करना, यह जानना कि सर्वत्र ईश्वर है, वह ही गुरु प्रदक्षिणा भी है। गुरु के बोधों को हृदय में प्रतिष्ठापित करना चाहिए, तभी शिष्य में ओज और शक्ति समा पाएगी। गुरु हमसे निरंतर साधना करवा कर आध्यात्मिक एकता को बढ़ाता है। शिष्य हीरक जैसा होने पर भी सद्‌गुरु की संगति के बिना प्रकाश हीन ही रहेगा।

हमारी जीवन यात्रा में कई मोड़ों पर कई राहे दृष्टिगोचर होती है। हम असमंजस मे पड़ जाते हैं कि किस राह को गम्य स्थान तक जाने के लिए चुने। ऐसे समय सद्‌गुरु की कृपा एक आकाशदीप की तरह मार्गदर्शन कर इस भवतारिणी से पार लगा देती है।

– रजनी प्रभा
फ्लैट नं. ३०२, ए-१ ब्लाक,
श्री हेमदुर्गा टावर्स, मियापुर,
हैदराबाद – ५०० ०४९, आन्ध्र प्रदेश.
संचार ध्वनि : (०)९४९०२४२२६६
ई-मेल : saiviswandh@gmail.com

❍❍❍

सद्‌गुरु तो वर्षा ऋतु के मेघसदृश हैं, जो सर्वत्र एक समान बरसते हैं, अर्थात् वे अपने अमृततुल्य उपदेशों को विस्तृत क्षेत्र में प्रसारित करते हैं। प्रथमत: उनके सारांश को ग्रहण कर आत्मसात कर लें और फिर संकीर्णता से रहित होकर अन्य लोगों में प्रचार करें। यह नियम जागृत और स्वप्न दोनों अवस्थाओं में प्राप्त उपदेशों के लिए है।

– श्री साईं सत् चरित –

सद्गुरु श्री साईं संदेश...

पूरे दक्षिण भारत में साईं भक्ति का प्रचार-प्रसार करने वाले पूज्य श्री एच्. एच्. बी. वी. नरसिंह स्वामी जी ने समय समय पर, गुरु पूर्णिमा के अवसर पर विश्लेषण से बताये गुरु संदेश श्री साईं लीला के सुधी पाठक जनों के लिए प्रस्तुत हैं। *(जुलाई-अगस्त २०१३ से)*

१० जुलाई, १९५० – गुरु पूर्णिमा

गुरु पूजा-अर्चना के लिए सभी पूर्णिमाएँ दिव्य एवं पवित्र मानी जाती हैं। इनमें आषाढ़ पूर्णिमा विशेष महत्वपूर्ण है। इसे व्यास पूर्णिमा अथवा गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं। महाभारत, भगवद्गीता तथा पुराणों के रचयिता महर्षि वेद व्यास सब गुरुओं के गुरु के रूप में 'प्रथम गुरु' अथवा 'प्रधान गुरु' माने जाते हैं। इस दिन से दक्षिणायन का प्रारम्भ माना जाता है; इसीलिए महर्षि वेद व्यास की पूजा-अर्चना से इस दिन का आरम्भ माना जाता है। इसके बाद ऊर्ध्वगामी अन्य गुरुओं की एवं उपासक के निजी गुरु की पूजा-अर्चना का विधान है। संन्यासियों एवं आचार्यों को वर्षा काल भ्रमण के लिए कष्टदायक प्रतीत होता है। वे किसी भी क्षेत्र के निवासियों से चतुर्मास में रहने की आज्ञा ले सकते हैं। क्षेत्रीय निवासी धार्मिक आचार्यों को आदर-सत्कार देकर, दो-चार महीने उनके सत्संग एवं सान्निध्य से लाभान्वित होते हैं। आचार्य या गुरु भक्तों को आत्मज्ञान जैसे महत्वपूर्ण विषय पर, जिसमें पूजा, योग, ध्यान, नैतिकता, आत्मिक अनुभूति तथा दर्शनास्त्र आदि शामिल हैं, व्यक्तिगत एवं सामूहिक मार्गदर्शन देते हैं।

हर साईं भक्त से यह आशा की जाती है कि वह साईं से तथा अन्य गुरुओं से यदि उसके हों, तो उनके साथ इस दिन से कम-से-कम चतुर्मास तक तो अवश्य जुड़ जाए। साईं बाबा की पहचान धर्म-गुरु या मोक्ष-गुरु के रूप में तो निश्चित् है। बाबा अपने भक्तों को आत्मा की ऊँचाइयों तक पहुँचाने के लिए तैयार करते हैं। आध्यामिक साधनाएँ, जो हमें जीवन में बहुत पहले शुरू कर देनी थीं, उन्हें शुरू (पुनः आरम्भ) करके कम-से-कम प्रशिक्षण अवधि तक यानी चतुर्मास के दौरान तो अवश्य ही जारी रखना है। जीवन की वास्तविकता का गम्भीरता से सामना करते हुए कर्मठता द्वारा जीवन का सर्वस्व एवं सर्वोत्तम जो व्यक्ति को हासिल हो सकता है, वह बाबा से पाना है। यहाँ 'सर्वस्व' एवं 'सर्वोत्तम' का अभिप्राय सम्पत्ति, स्वास्थ्य, संतान-सुख एवं सफलता तक सीमित नहीं है। जीवन का सर्वोत्तम उद्देश्य परमानंद एवं आत्मानुभूति का क्षण है। भक्ति, आत्मज्ञान, योगनिष्ठा आदि के द्वारा भक्तों का वास्तविक कल्याण होता है। हर साईं भक्त को रोज़ाना कुछ समय इन साधनाओं को देना है। चतुर्मास काल के समाप्त होने के पश्चात् यदि भक्त को अपने अंदर आध्यात्मिक स्तर पर कोई परिवर्तन नज़र नहीं आता, तो संदेह करना होगा कि अवश्य ही साधना के दौरान साधक से कुछ गलत हुआ होगा। साईं से तो कुछ गलत नहीं होता। वे तो हर क्षण अपनी असीम अनुकम्पा एवं स्नेह अपने उन उत्साही भक्तों पर लुटा रहे हैं, जो उनके पास सही तरीके से जाते हैं।

मेरी हर साईं भक्त से विनम्र प्रार्थना है कि वह गुरु पूर्णिमा के इस पावन पर्व पर ध्यान दे, ताकि यह काल (चतुर्मास) उन्हें विशेष आध्यात्मिक उपहार दिये बिना व्यतीत न हो जाए। बारह महीने पहले जो संदेश मैंने आपको दिया था, उसके आधार पर हर साईं भक्त अपना मूल्यांकन करे –

१. क्या हमने अपने उद्देश्य को पाने का रास्ता तय किया है?

२. क्या हमने इस दिशा में कुछ ठोस क़दम उठाये हैं?

३. यदि उठाये हैं, तो हमें कितनी सफलता प्राप्त हुई है?

कुछ लोगों की यह मान्यता है कि जीवन में 'मृत्यु का भय' ही एक मूल कारण है जो हमें इस गम्भीर विषय पर सोचने को विवश करता है। युवा वर्ग को इस गम्भीर विषय पर आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसा सोचने वालों को हम याद दिलाना चाहते हैं कि मृत्यु केवल वृद्ध लोगों के ही पीछे नहीं पड़ी है, मृत्यु की तलवार इस धरती पर जन्में हर प्राणी या जीव-जंतु पर हर क्षण लटक रही है –

अंहनी अंहनी भूतानी।
गच्छन्ती एवा यमाल्यम,

सेशाह स्थिवरम इच्छति
किम अच्छारयाम अत: परम

अर्थात्, दिन-प्रतिदिन इस धरती पर जन्में जीव मृत्यु के मुख में समा रहे हैं। जो जीवित हैं उनके आचरण तथा उनकी चेष्टाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है। यह बात कितने आश्चर्य की है? वास्तविकता यह है कि कुछ सीमा तक अनुभवहीनता उत्साही, जिज्ञासु मानव स्वभाव में प्राकृतिक होती है, जिसका उद्देश्य प्रतिदिन के सांसारिक कामकाज चलाना होता है; परन्तु आध्यात्मिक उन्नति में यह कड़ी बाधा है। सात्त्विक एवं उच्च राजसिक व्यक्तियों के लिए यह उचित होगा कि वह अक्सर इस अनुभवहीनता से ऊपर उठ कर, जीवन की यथार्थता (सच्चाई) उसके ख़तरों एवं उसकी सम्भावनाओं और भावी जीवन के लिए संचित कर्म-भोगों के ख़जाने पर अपना ध्यान देना आरम्भ करें।

यहाँ हम साईं भक्तों से अपेक्षा करते हैं कि, वे आदर्श रवैया अपनाएँ और अपने आपको जीवन की व्यर्थता की दलदल में डूबने न दें। विशेष स्थिति, जिसमें कि व्यक्ति की प्रतिष्ठा को धब्बा लगने की गुँजाइश हो, या फिर इससे बुरी दशा, जिसमें हम तीव्र उत्सुकता से भौतिक सुख-साधनों के पीछे भागें और अपनी अन्तर्रात्मा की छोटी सी पुकार को भी न सुन पाएँ तथा अपने आपको भौतिकता में डूबो दें।

एक क्षण रुक कर, हम इस गम्भीर विषय पर विचार करते हैं कि क्या कारण है कि कुछ लोग इस आत्-चिंतन (आध्यात्मिक स्थिति एवं प्रगति) के विषय पर अपरिपक्वता बरतते हैं तथा कुछ लोग इस विषय पर गम्भीरता से सोचते हैं? हम पाते हैं कि इसके अनेक कारण हैं।

भौतिक व्यर्थता से ऊपर उठने की आकांक्षा रखने के प्रमुख कारणों पर वातावरण का प्रभाव होता है। इसमें विशेषत: उस व्यक्ति का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण है, जिसके आचरण एवं चरित्र का हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ा हो और पड़ रहा हो। उसका इस मसले में प्रारम्भिक प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण है तथा जिसकी प्रेरणा बचपन तथा युवावस्था में, घर के भीतर और बाहर, बड़ों के आचरण तथा व्यवहार में झलकती है। इन सभी प्रभावशाली कारणों पर ध्यान देने पर हम पाते हैं कि इन सबमें महत्वपूर्ण है 'गुरु का प्रभाव'। हर धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति हम पर असर डालता है; परन्तु उनमें से एक सच्चे साधक से आज नहीं तो कल जुड़ना या उसे चुनना पड़ता है। साईं बाबा के अनुसार गुरु 'ऋणानुबंध द्वारा प्राप्त होते हैं'। वह गुरु जो हमारी पिछले जन्म में मदद कर रहा था, वह इस जन्म में हमें निराश्रित नहीं छोड़ सकता। वही हमें अपने प्रभाव से आकर्षित करता है। इस कारण हर उत्साही भक्त को यह याद रखना अति आवश्यक है कि वह आज फिर पुराने ऋणानुबंध द्वारा समर्थ सद्गुरु साईं नाथ से जुड़ रहा है। इस जन्म में साईं नाथ से जुड़ने का कारण चाहे जो भी हो, अब साईं भक्तों के समूह में शामिल होने में ही उसकी भलाई है।

भौतिक जगत की यात्रा सुख-सुविधा से सकुशल पार करना, आध्यात्मिक प्रगति एवं संरक्षण के साईं ही पतवार (sheet anchor) हैं। अब भक्त के पास और कुछ नहीं रह जाता; इसलिए उचित है कि उसके पास जितना भी समय बचा है, उसमें जी-जान से अपना मजबूत सम्पर्क बाबा के साथ बनाये। इस मामले में अनमने मन से किया गया प्रयास समय और शक्ति को क्षीण करता है। बाबा के साथ श्रद्धा, विश्वास और उत्साह पूर्वक किये गए सम्पर्क द्वारा आपकी लौकिक एवं आध्यात्मिक स्थिति में सुधार प्रतीत होगा तथा आपके व्यवहार, चित्त और चिंतन को उँचा उठा कर आपकी क्षमता एवं उपलब्धियाँ बढ़ा देगा, जो आपके ध्येय को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। साईं ने स्वयं इस मामले में अनमने मन से की गई शुरुआत को नकारा है। यह देखने को मिलता है कि कुछ लोग कोई जप-साधना नहीं करते; परन्तु बाबा के सम्पर्क में आने के बाद उनकी स्थिति में सुधार हो जाता है। नाना साहेब चाँदोरकर, एच्. एस्. दीक्षित, उद्धव बुआ, मानकर आदि अनेक लोगों ने बाबा के साथ अंतरंग सम्पर्क द्वारा जीवन में प्रगति की है। आप सब में से हर एक आज भी, जो हिम्मत जुटा कर तहे दिल से बाबा से जुड़ेगा, उसे बाबा अधिक से अधिक सुविधाएँ एवं प्रेरणाएँ देकर उसका स्वागत करेंगे। श्री साईं बाबा दुनिया से गये नहीं हैं, वह कृपा पूर्वक भक्तों के बीच मौजूद हैं। आपको केवल बाबा का ध्यान करना है। कहीं भी, और कभी भी, किसी भी समय, बाबा आपको अपनी मौजूदगी का अहसास कराते

हैं। यह हमारा गौरवपूर्ण चार्टर है, और यह हमारा घोषणा पत्र है। इस घोषणा पत्र की छाँव में रहने का हम सबका एक समान अधिकार है।

अब मैं आप सबको ध्यान दिलाता हूँ कि हर अधिकार के साथ कर्तव्य जुड़ा है। जब आप सब के पास बाबा की मदद से ऊपर उठने का अधिकार तथा अवसर है, तो आपकी निष्ठा, आपके प्रयास एवं ईश्वर कृपा पर निर्भर है कि आप इस सुनहरे अवसर का पूर्ण लाभ उठाएँ तथा अपने को उस ऊँचाई तक ले जाएँ, जहाँ तक आप जा सकें। इसका तात्पर्य यह हुआ कि साईं जो रास्ते खोलेंगे, वह हर भक्त के लिए भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। व्यक्ति, जो साधना पहले से कर रहा हो, वह उसे जारी रखे तथा बाद में जो बताई जाए, वह भी करे।

हमें साईं को मज़बूती से थामना है। साईं भाव एवं साईं तत्व को अपने में समाना है। 'आप जो साचते हैं, वही आप बनते हैं', इस सुनिश्चित सत्य का प्रमाण दुनिया के सभी तबकों में समाहित है तथा यह गुरु-शिष्य परम्परा तक सुरक्षित है। जिस प्रकार जीसस क्राइस्ट ने अपने शिष्यों के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी, उसी प्रकार साईं अपना आध्यात्मिक स्वरूप अपने भक्तों पर न्यौछावर कर रहे हैं, ताकि हर भक्त उसे ग्रहण कर सके। गुरु पूर्णिमा ही साईं में लीन होने के लिए सर्वोत्तम दिवस है। यह सब तभी सम्भव है, जब आप धर्मशास्त्रों द्वारा निर्धारित एवं अभीष्ट मार्ग पर ध्यान पूर्वक, श्रद्धा पूर्वक उत्साहित होकर चलेंगे, तभी आप निश्चित ही इन सब अनुष्ठानों द्वारा साईं तत्व को ग्रहण कर सकेंगे। हमारे देश में हर शिष्य गुरु-पूजा करता है जो गुरुओं से दीक्षा लेता तथा आध्यात्मिक पथ का अनुसरण करता है। साईं केवल चमत्कार करने वाला या लौकिक सुख-सुविधा की पूर्ति करने वाला तत्व नहीं है, परन्तु यह भी सत्य है कि लौकिक सुख-सुविधाओं से आकर्षित हो झुंड के झुंड मंदिरों में जाते नज़र आते हैं। बाबा के अनुसार भौतिक सुख-सुविधाओं के द्वारा वे लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। बाबा से जुड़ने के बाद भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों उपलब्धियाँ उन्हें प्राप्त होने लगती हैं।

मैं हर साईं भक्त से विनती करता हूँ कि वह गुरु-पूजा करे अथवा गुरु-पूजा में शामिल हो, जहाँ भी शास्त्रों द्वारा निर्धारित गुरु-पूजा उत्तम तरीक़े से हो रही हो। यदि भक्तों के पास इस प्रकार की सुविधा या इसके बराबर का कोई अन्य विकल्प न हो, तो ऐसे साईं भक्तों के लिए उत्तम होगा कि वे पूरा दिन साईं-चिन्तन में व्यतीत करें। भक्त का मन, वाणी और कर्म साईंमय हो जाए। वे साईं के नाम पर उपहार दे सकते हैं, अन्नदान कर सकते हैं तथा साईं नाम का जाप कर सकते हैं। साईं-पूजा एवं साईं भजन कर सकते हैं। अन्य लोगों को साईं के विषय में बता सकते हैं तथा अपने आपको साईं में डूबो देने का प्रयास कर सकते हैं। अपने हृदय में साईं शक्ति को महसूस करने के कई तरीक़े हैं - जैसे साईं भजनों को गुनगुनाना तथा साईं नाम को अपने मन में दोहराते रहना। एक और आसान विकल्प है - साईं मंदिरों एवं भजनों में जाना। पूरा दिन या आधा दिन उपवास रखा जा सकता है, या फलाहार किया जा सकता है। आधी रात या अधिक रात तक साईं जागरण भी किया जा सकता है। इस तरह गुरु पूर्णिमा दिवस उत्तम तरीक़े से मनाया जा सकता है। यह भक्तों के लिए नए वर्ष में प्रवेश करने के समान है। भक्त ने अपने अंदर साईं डाइनुमा से काफ़ी ऊर्जा भर ली है तथा आने वाला वर्ष साईं से और भी सम्पन्नता से जुड़ने में व्यतीत करना है। साईं के भजन, ध्यान और पूजा-पाठ में अधिक समय व्यतीत करना है। इन सबके भी ऊपर है अपने क्रोध, अहंकार और लोभ को साईं के चरणों में अर्पित कर त्याग देना तथा अपने आपको साईं को समर्पित कर देना। यह दृढ़ संकल्प करना कि बाबा द्वारा दिये गए हर सूत्र का प्रयोग करने पर हमारी आध्यात्मिक सुरक्षा एवं प्रगति सुनिश्चित है।

साईं की कृपा एवं आशीर्वाद द्वारा सबकी गुरु-पूजा सफल हो तथा आप सबकी गुरु भक्ति में प्रतिदिन वृद्धि होते रहे।

अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद
- रीता मलिक
१०, मीराबाई पॉलिटेक्निक,
आवासीय परिसर, महारानी बाग,
नई दिल्ली - ११० ०६५.
ई-मेल : malik.rita2@gmail.com
संचार ध्वनि : (०)९८६८८५५८२०

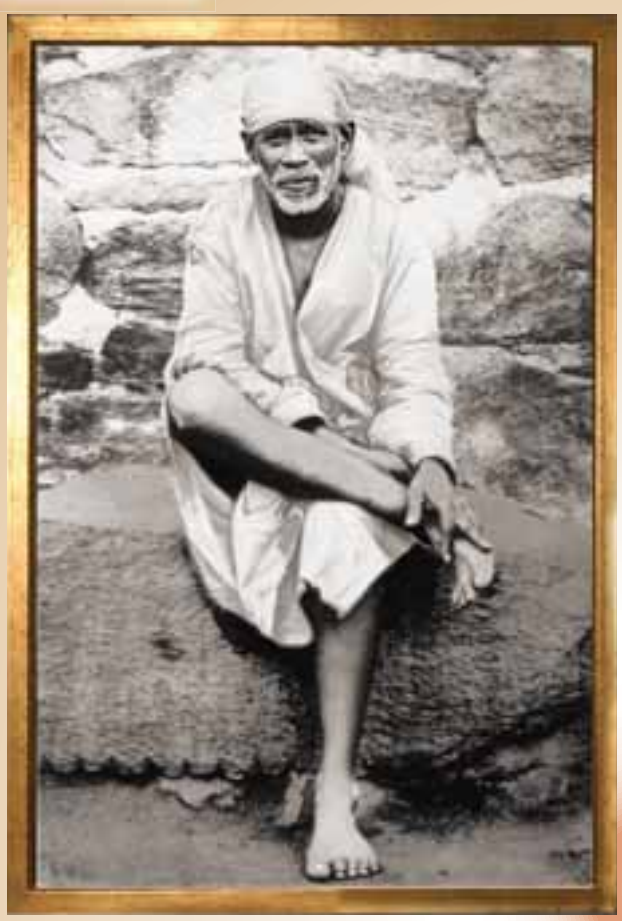

नित्य प्रतीति से करना अनुभव

१५ अक्तूबर, १९१८ को श्री साईं बाबा की महासमाधि के बाद भक्तों के स्वानुभव...

(साईं भक्त शिवनेसन स्वामी जी की प्रेरणा से साईं भक्त रामलिंगम स्वामी जी द्वारा अंग्रेजी में लिखित 'ऐम्ब्रोशिया इन शिर्डी' नामक मूल पुस्तक से –)

(जनवरी–फरवरी २०१४ अंक से क्रमशः)

(३७) बाबा ने महासमाधि लेने के तीस दिन बाद १३ नवम्बर, १९१८ को श्री काका महाजनी को दर्शन दिये –

१३ नवम्बर, १९१८ को श्री साईं बाबा श्री काका साहेब महाजनी के स्वप्न में प्रकट हुए और कहा, ''तुम अभी तक क्यों सो रहे हो? जागो और मेरी एक महीने की धर्म–क्रिया (मृतक के देहावसान के एक मास बाद उसके निमित्त की जाने वाली धार्मिक क्रिया) का अनुष्ठान करो।

जागने पर महाजनी ने गणना करके देखा, तो वास्तव में बाबा की महासमाधि के बाद का वह तीसवाँ दिवस ही था। उन्होंने स्वयं ने अपने घर में ही तीसवें दिन की धार्मिक क्रिया करने की तैयारी की। उन्होंने मध्याह्न के भोजन के लिए श्री काका साहेब दीक्षित, श्री एम्. वी. प्रधान और श्री दाभोलकर को आमंत्रित किया। उन्होंने बाबा के भजन गाये और सभी के लिए सम्पूर्ण दिवस आनंदमय रहा।

प्रिय पाठकों! विचार करने पर इस घटना के द्वारा क्या ऐसा नहीं लगता कि महासमाधि के बाद भी बाबा जीवित ही हैं?

(३८) बाबा ने श्रीमती सुशीला देवी भटकल को सन्त रमण महर्षि के रूप में दर्शन दिये –

सन्त रमण महर्षि श्रीमती सुशीला देवी भटकल के पारिवारिक गुरु थे। उन्हीं के शब्दों में –

हमने उनके दर्शन कई बार किये थे। हम उनकी पादुकाओं की पूजा किया करते थे। महाराज की महासमाधि के अवसर पर हम स्विट्जरलैण्ड में थे। उनका शरीर तीन दिन तक सुरक्षित रखा गया था; फिर भी हम उनके पार्थिव शरीर के अंतिम दर्शन करने में असमर्थ रहे। हमें बड़ी निराशा हुई; क्योंकि हम उनकी समाधि के पन्द्रह दिन बाद ही चेन्नई पहुँच पाए।

उस समय कुछ भक्त श्री साईं बाबा मंदिर बनाने के लिए चंदा एकत्रित कर रहे थे और उन्होंने हमसे भी चंदा माँगा। उन्होंने बाबा की प्रशंसा की और हमसे पहले शिर्डी जाकर बाबा की समाधि के दर्शन करने के लिए कहा। हमने उन्हें बताया कि सन्त रमण महर्षि हमारे गुरु होने के कारण हम पहले वहाँ जायेंगे और बाद में कहीं और।

मैंने दो दिन में ही, अर्थात् ३ मार्च, १९५३ को ही शिर्डी की यात्रा की और बाबा के गुरुस्थान में पिण्डी (शिवलिंगम्) के पीछे रखे हुए बाबा के चित्र के दर्शन किये। जब हमने चित्र की ओर टकटकी बाँध कर देखा, तो बाबा ने अपने दर्शन सन्त महर्षि रमण के रूप में दिये। दूसरी भक्त – श्रीमती डोंगरे भी मेरे साथ थी।

मैं शिर्डी में सात–आठ दिन तक ठहरी और बाबा के सत् चरित का पारायण किया। मैं इस आश्वासन से भरपूर हृदय के साथ अपने घर गयी कि बाबा ही सन्त रमण महर्षि हैं।

(३९) बाबा ने श्री राम, श्री हनुमान, श्री कृष्ण और श्री दत्त के रूप में दर्शन दिये –

श्री पाण्डे, जो वैतरना, कल्याण के व्यवसायी ठेकेदार थे, १३ अगस्त, १९५२ को शिर्डी गये और वहाँ कुछ दिनों के लिए ठहरे।

२१ अगस्त, १९५२ को मध्याह्न आरती के दौरान, वे गहन ध्यान में थे। उनकी आँखें बंद थीं। उनको ऐसा प्रतीत हुआ कि बाबा अपनी कोहनी के पास से अपने दाहिने हस्त को ऊपर उठाये हुए हैं और एक तेजोमय प्रकाश–चक्र उनको घेरे हुए है और उस चक्र में श्री राम, श्री हनुमान, श्री कृष्ण और श्री दत्त उसमें विद्यमान हैं। जब श्री पाण्डे ने अपनी आँखें खोलीं, तब वह दृश्य गायब हो गया। उन्होंने बाबा के एक भक्त श्री डोंगरे से इस दृश्य के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि वे बाबा ही थे जो उन्हें इन सब रूपों में दिखाई दिये और बाबा ही इन सब रूपों में एक ही हैं।

श्री पाण्डे इस अवलोकन (vision) से पूर्णतया सन्तुष्ट हुए और अपने घर लौट गये।

(४०) बाबा ने श्रीरंग आत्माराम चोलकर, चोलकर बंगला, दहिसर, की अविवाहिता पुत्री को दर्शन दिये –

श्रीरंग आत्माराम चोलकर शिर्डी के श्री साईं बाबा के भक्त थे। उनकी अविवाहिता पुत्री ने दो सप्ताह में श्री साईं सत् चरित के दो पारायण पूरे कर लिये थे। एक गुरुवार को द्वितीय पारायण पूर्ण होने के बाद उसने बाबा को अर्पित करने के लिए नैवेद्य तैयार किया और जैसा कि श्री साईं सत् चरित में उल्लिखित है, बाबा के दर्शन के लिए प्रतीक्षा करने लगी।

बाबा चुपचाप आये और उसके घर के बरामदे में बैठ गये। उसने उनको देखा और ये बाबा ही हैं, ऐसा उनको पहचानते हुए, उनका हाथ पकड़ कर उनकी घर में प्रवेश करने में सहायता की। पहले उसको उनका हाथ बड़ा कठोर प्रतीत हुआ। परन्तु, शीघ्र ही वह इतना कोमल हो गया, मानो एक बच्चे का हाथ हो! उसने उनको एक आसन पर बिठाया। वे हिन्दी में बोले और कहा कि क्या वह उन्हें दक्षिणा अथवा कम्बली (साधु–सन्तों के द्वारा प्रयोग में लाया जाने वाला विशिष्ट कम्बल) देगी? उसने कहा कि वह उन्हें सबकुछ अर्पित करेगी, जो उसके पास है। तब उसने उनकी आरती उतारी और नैवेद्य अर्पित किया। बाबा ने नैवेद्य–थाल में से सब भोज्य सामग्री आरोग ली और उसे अठन्नी (आधा रुपया) दी। उसने बाबा को अपने पूजा–कक्ष में आमंत्रित किया।

पूजा–कक्ष में बाबा ने एक विशेष छाया–चित्र की ओर इंगित किया और पूछा कि यह किसका है? उसने कहा कि यह उनका (शिर्डी के साईं बाबा का) ही है। उन्होंने कहा, ''बदरी, हरिद्वार, रामेश्वर और तब शिर्डी''; फिर बाबा ने उसे श्री साईं बाबा का एक बढ़िया छाया–चित्र दिया और वे एक पद–चिह्न पूजा–कक्ष में और एक वहाँ जहाँ उन्होंने नैवेद्य आरोगा था, अंकित करते हुए प्रस्थान कर गये।

उसने तत्पश्चात् बाबा का अनुगमन किया और उनके सम्मुख खड़ी हो गयी। तब बाबा ने उसे पूजा–कक्ष में जाने के लिए कहा। वे फिर ग्राम–मंदिर में गये और उन्होंने पुजारी से दुअन्नी (दो आने का सिक्का = आज के लगभग १२ पैसे) देने के लिए कहा, जोकि उसके पास एक पैकेट में थी। पुजारी ने तुरन्त ही वह दुअन्नी बाबा को दे दी।

बाबा लगभग एक घण्टे के बाद चोलकर के बंगले को लौट आये। श्री चोलकर की पुत्री ने बाबा से कहा कि उन्होंने मात्र नैवेद्य ग्रहण किया था और भोजन नहीं किया था। और ऐसा कहते हुए उसने बाबा को भोजन परोस दिया। उसने बाबा के हाथ से प्रसाद माँगा। बाबा ने उसे और उसकी भाभी को प्रसाद दिया। बाबा ने उसकी भाभी से एक चद्दर और सवा रुपये की दक्षिणा माँगी, जो उन्होंने बाबा को दे दी और उनके आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की।

बाबा ने उसको 'सब शुभ होगा' कहते हुए आशीर्वाद दिया और प्रस्थान कर गये। उसने उनकी संगत की; परन्तु वे कुछ दूर चलने के बाद अदृश्य हो गये। बाबा ने इस प्रकार अपने भक्तों की इच्छाओं को पूर्ण किया।

(क्रमशः)

अंग्रेजी में संकलित, सम्पादित –
ज्योति रंजन राऊत
८/ए, काकड़ इस्टेट, १०६, सी फेस रोड़,
वरली, मुम्बई – ४०० ०१८.
ई–मेल : **jyotiraut15@gmail.com**
अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद – **मदन गोपाल गोयल**

Chapter 4 | Chapter 12 | Chapter 28 | Chapter 29 | Chapter 30 | Chapter 36 | Chapter 51

– Shri Sai Sat Charita –

Chapter 32 | Chapter 11 | Chapter 12 | Chapter 18

Shri Sai Baba - God or Guru ?

Shri Sai Baba always said, *"Allah Malik"*, or *"Allah achchha karega"* (Good will happen with God's will). He never took any credit for the miraculous doings, but attributed it to God.

Shri Sai Baba had a divinity, which was evident right from the moment He stepped in Shridi. There were many, who the moment they cast their eyes could immediately recognize His divinity.

Gangagir, of Vaishnav sect visited Shirdi very frequently. When he first saw Baba carrying pitchers of water in both hands, he said, "Blessed is this Shirdi to have got this jewel. This Man carrying water today is no ordinary soul. As Shirdi has accumulated merits, it has secured this jewel."

A well-known saint, Anandnath of Yeola *math*, a disciple of Akkalkot Maharaj, when he saw Baba, exclaimed, "He is a precious diamond; you will realize this in the near future." The prophecies were made, when Baba was young. And, in due course of time, they were proved right.

Gaulibuva, 95-year old *warkari* (pilgrim on foot), who regularly visited Pandharpur, also was devoted to Sai Baba and visited Shirdi every year. He would say, "This is the merciful Pandharinath Incarnate."

There are unparalleled events that were noted by devotees, which is not possible for a mere human being to perform. A few examples cited below will elaborate this point...

It is believed that a bath in the holy waters of Prayag, the confluence of Ganga and Yamuna is sacred. Once, Das Ganu wished to go to Prayag for a bath, and sought Baba's permission for doing so. Baba replied, "It is not necessary to travel so far. Shirdi itself is Prayag. Let there be firm faith in your mind". Then wonder of wonders happened! When Das Ganu placed his head on Baba's Feet, out came a stream of Ganga and Yamuna from both His toes. At the sight of this miracle, Das Ganu was choked with emotion.

On one Makar Sankranti day, Megha wanted to apply sandalwood paste and bathe Baba with water from the Godavari river. He considered Baba as Lord Shiva, and knew *abhishek* (sacred bath) on that auspicious day, would please Shiva. Baba tried dissuading Megha, but gave in, when He was persistent. So, before sunrise, Megha set out to traverse 16 miles (both ways), without an umbrella or any other protection.

He brought the holy water and made preparations for the bath at noon. Baba then again

asked Megha to spare Him from this bath saying what a *fakir* like Him has to do with Ganga water. But, Megha was persistent, so Baba came and sat on the wooden board and said, "The head is the important part, so pour a little water on it, which is as good as a whole bath. At least do this much." Megha acquiesced.

Then he lifted the pot and in a burst of overwhelming love cried *"Har Har Gange"* and poured the entire pot of water on Baba's head. But, when he kept the pot down and looked at Baba's head, he was astonished to see only Baba's head was wet, but not a drop stayed on His clothes or body. This was Baba's *leela* of indulging a devotee's wish and reaffirming his faith.

Baba had perfect control over the nature. He could at mere glance enhance or lighten the fire, or clear the overcast skies.

One evening, a terrible storm started blowing in Shirdi. Wild winds, heavy rain and lightening struck out with ferocity. Bird, beasts and man took shelter and grew frightened with every passing moment. There are many Gods and Goddesses in Shirdi, but the people made a supplication to their living God - Sai Baba. And, hearing their prayers, Sai's heart melted. He came to the edge of the mosque and shouted loudly. Immediately the rain and wind abated and after a while stopped. Everyone thanked Baba and went their way.

Once, in the afternoon, the flames from the *dhuni*, started flaring up. In no time it started reaching the wooden planks of the ceiling in the mosque. Everyone present was watching the growing fire with dismay, as it could burn down the mosque. But, none dared to do anything to quell it or rouse Baba from His trance. Then Baba Himself realised the situation and started striking His baton against the column and looking at the *dhuni* said, ''Calm down'' and with every stroke, the flames started subsiding. Baba had perfect control over the elements.

On *Dhanteras* day in 1910, Baba was sitting near the *dhuni* putting logs in the fire. But, all of a sudden instead of a log, He thrust His hand in the fire and scorched it.

Shama, who was standing nearby, noticed this and ran immediately. Holding Baba tightly round the waist he pulled Baba away from the *dhuni*. Baba, with a start, came out of a trance. Shama enquired, why He had thrust His hand in the fire. Baba explained, "When the blacksmith called out to his wife, she began to blow the bellows vigorously, unmindful of the child she was holding in the armpit. The vigorous activity resulted in the child slipping and falling into the fire. I picked up the child and scorched my hand, but at least the child's life is saved."

On seeing Baba's severely scorched hand, Shama wrote a letter to Nanasaheb Chandorkar, and the latter came to Shirdi with Dr. Paramanand. From the day the hand was burnt, Bhagoji Shinde was massaging it with ghee, then covered it with a leaf and bandaged it tightly every day.

Baba kept on postponing, showing His hand to the doctor, by saying, "*Allah* is our *vaidya* (healer)." In due course of time, the hand healed and everyone was relieved.

But, till Baba's *Mahasamdhi* (1918), every morning Bhagoji, regularly tended to His hand, massaging it and then bandaging it. Bhagoji, had his body festered with bleeding sores, due to leprosy. His fingers and toes had fallen and his entire body was repulsive, due to the stinking sores. Baba, being a *siddha*, did He really need treatment? It was for the welfare of the devotees that He allowed the service.

One day, Baba was sitting in His usual place in the mosque; suddenly He shouted, "Oh!" The next moment His headdress and *kafni* were drenched and water started dripping from it for more than half an hour. Soon a pool of water gathered near Baba. The devotees were amazed, but none dared ask Baba, how He got drenched all of a sudden. They silently swept the floor and dried Baba's clothes.

After three days, Baba received a telegram from a devotee, Jehangirji Framji Daruwala, who thanked Baba for saving his life. The full story connected with the incident was revealed later. Jehangirji was a naval captain during the Russo-Japanese war and he found all his ships, except three, were sunk by the enemy. When he feared that the three including his own would soon be sunk, he took out Baba's photograph from his pocket and with tears in his eyes prayed to Baba to save him and his three ships. Baba at once appeared and towed the ships to safety.

Baba had the eight *siddhis* (extraordinary

powers) like *anima*, *mahima*, *laghima*, etc. serving Him with folded hands. These *siddhis* allow a being to change size, shape, etc. at will. And illustrating this point is the following *leela*...

A devotee gave Baba a four feet long and three-quarter foot wide wooden plank. Baba suspended the plank from the ceiling with worn out clothes. The plank was seven feet above the ground and Baba would keep four earthen lamps, one on each corner and lie on the plank. The devotees wondered how Baba climbed such a height without upsetting the earthen lamps, etc. Evidently, the *siddhis* had to do something with this incredible *leela*.

There were scores of events, which highlighted the prowess of Baba. He, time and again, went to the aid of devotees, saving their lives, warning them off danger; and for ever working for their worldly and spiritual progress.

As Baba's *mahima* (fame) kept spreading, more and more people started thronging to Shirdi. The devotees, who came to Baba, placed flowers at His Feet and prostrated in reverence. Baba tried dissuading them and suggested, they pray to the God in their temples. But, the devotees said that they had accepted Him as their living God. Over a period of time, Baba relented.

In 1900, Baburao N. Chandorkar, aged four, innocently applied sandal paste on Baba's forehead, as they apply to God's image; Baba did not object. After this, the others were allowed to apply it too. Prior to this, only *Mhalsapati* was allowed to apply the paste to Baba's throat; the others applied it to His Feet.

The first man to offer *Aarati Pooja* to Baba was Tatyasaheb Nulkar. One day, he lit two lamps and waved it before Baba; thence, he did it regularly. After his demise, it was conducted by Megha; and after Megha's death Bapusaheb Jog performed the *Pooja*.

From 1908 the individual worship turned into a congregational worship. There were no fixed rituals for the *Pooja* or songs for the *Aarati*, till Krishnarao Bhishma wrote the songs for the *Aarati*. Later, some songs of Das Ganu and Upasani Baba were also added. From 1904, Dada Kelkar started performing *Guru Pooja* on *Guru Pournima* day, which continues till today.

Though the faith of Baba's *bhaktas* (devotees) kept on getting firmer and firmer that He was none other than God, Baba Himself never accepted this. He always said, *"Yade Haq"*, which means 'I remember God' and never said, *"Anhal Haq"*, which means 'I am God'.

Another instance highlights this...

Once, a number of devotees came to Baba and asked Him, whether the *Puranas* were true. Baba replied in the affirmative. Then the devotees asked Him, who were Ram and Krishna; Baba replied that they were *Avatars* (incarnations) of God. The devotees informed Baba that Prof. G. G. Narke did not accept Him as God. Baba said, "What he says is true. God exists for those who believe. Follow your faith and as you are devotees, you should not listen to such talk. I am your father and you should not speak like that."

Baba was a *Siddha* (possessing extraordinary powers); but behaved like a *Sadhak* (spiritual aspirant). *'Allah Malik'* was constantly on His lips. He knew no attachment to things of this world or beyond. He was totally absorbed in the Self. His speech was nectar sweet. He was ever vigilant for the welfare of all. For Him, the rich and poor were alike, even the animals were one with Him.

He was wise, but never made a pompous show of it. He did not leave His place, yet knew everything that took place in the world. Though outwardly He held a royal *durbar* (court) regularly and related a thousand stories, yet, inwardly He was committed to silence. His inner self was like the tranquil sea. He was beyond dualities (joy and sorrow, love and hate, etc.). He did not aspire to be recognized or honoured.

Baba was a God or Guru - a devotee will realize this with Baba's grace.

- Shamshaad Ali Baig
Mobile : **(0)9820437006**
E-mail : **prasaar@gmail.com**

References :
'Shri Sai Sat Charita' by **Govind R. Dabholkar**
'Shri Sai Leela' magazines
'Sai Baba - His Divine Glimpse' by **V. B. Kher**
'Sai Katha Sagar' by **Shamshaad Ali Baig**
'A Comprehensive Life Sketch of Shri Shirdi Sai Baba' by **Sathya Sai Shree Lakshmi**
'Shri Sai Baba' by **Swami Sai Sharan Anand**

शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं...!

शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं;
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं...
कोई तुझसा नहीं अवतारों में,
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं...!

तू तो साईं दया की मूरत है,
तू तो साईं दया की मूरत है;
दिखे तुझमें ख़ुदा की सूरत है,
दिखे तुझमें ख़ुदा की सूरत है;
ये तेरा रूप – ये तेरे जलवे,
जैसे चाँद हो नभ के तारों में।
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं;
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं...

मिले मुझको कृपा तेरी भक्ति,
मिले मुझको कृपा तेरी भक्ति;
छबि नज़रों से है नहीं हटती,
छबि नज़रों से है नहीं हटती;
तेरी कीर्ति साईं तेरी महिमा,
गूँजती है सभी दिशाओं में।
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं;
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं...

तू ही साईं बसा है दिल में मेरे,
तू ही साईं बसा है दिल में मेरे;
गाता रहता हूँ सदा गीत तेरे,
गाता रहता हूँ सदा गीत तेरे;
तुझको पा लूँ, तुझी में खो जाऊँ,
रहूँ डूबा तेरी नज़ारों में।
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं;
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं...
कोई तुझसा नहीं अवतारों में,
शिर्डी वाले, तेरा जवाब नहीं...!

"How wonderful was the *Guru*'s school! I became detached from my parents' love and the chains of greed and love snapped. I attained salvation easily.

Nothing appeared impossible. My evil tendencies vanished. My previous *'karmas'* were wiped out. I thought I should embrace this *Guru's* neck and remain staring at him always.

If his image was not reflected in the eyes, then they were only balls of flesh! Better still, I would have preferred to be blind. Such was the effect of the school on me!

Which unfortunate individual would have wanted to leave the precincts of this school having once entered it? My *Gururaya* was my mother, my father, my property - everything to me.

All the senses, together with the mind, concentrated themselves in my eyes to meditate on him.

The Guru was the sole object of my meditation. The entire universe assumed his form. I was conscious of none else. This is known as 'Singular Devotion'.

Meditating on the form of the *Guru*, the mind and intellect were baffled. Therefore, in the end, I could only pay obeisance to him, worldlessly."

- Shri Sai Baba

- Shri Sai Sat Charita -

बस साईं–साईं बोल...

बँटे नहीं हैं प्रभु–श्री, बँटे नहीं सब लोग;
सबका मालिक एक है, बस साईं–साईं बोल...
रख ले प्रभु में आस्था, कर सच्चा विश्वास;
ध्यान लगा ले साईं में, होना नहीं निराश।
बँटे नहीं हैं प्रभु–श्री, बँटे नहीं सब लोग;
सबका मालिक एक है, बस साईं–साईं बोल...
हर प्राणी का मान रख, दुख नहीं पहुँचा;
हर किसी को दे ख़ुशी, गुण साईं के सुना।
बँटे नहीं हैं प्रभु–श्री, बँटे नहीं सब लोग;
सबका मालिक एक है, बस साईं–साईं बोल...
साईं सुमिरन जो करे, मन की शांति पाये;
उसे नहीं क्लेश हो, इस जग से तर जाये।
बँटे नहीं हैं प्रभु–श्री, बँटे नहीं सब लोग;
सबका मालिक एक है, बस साईं–साईं बोल...

– विजय कुमार श्रीवास्तव –
साईं तेरी महिमा, २/४५६, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ – २२६ ०१०, उ. प्र.
ई–मेल : vijshirdi@gmail.com संचार ध्वनि : (०)९९१९०३०३६६

Shirdi News
Mohan Yadav
✻ Public Relations Officer ✻
Shree Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi)
- Translated from Marathi into English by
Vishwarath Nayar

Shri Guru Pournima Utsav 2014

Shri Guru Pournima festival, organized by Shri Sai Baba Sansthan, this year like every year, passed off amidst chants of Shri Sai Baba's name in an enthusiastic and auspicious atmosphere, from Friday, July 11 to Sunday, July 13. Lakhs of devotees availed the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* on the main day of *Guru Pournima*. The Sansthan's and surrounding premises were fully crowded with Sai devotees.

The *Guru - shishya* (teacher-student) tradition is very ancient. *Ashadhi Pournima* is celebrated as *Guru Pournima* to express gratitude to our teachers. This *Pournima* is also known as Vyas worship (day). The tradition of celebrating *Guru Pournima* in Shirdi commenced from the period of Shri Sai Baba's incarnation. Therefore, this day has extra-ordinary significance. Innumerable devotees with faith in Shri Sai Baba come to Shirdi on *Guru Pournima* every year and take the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* and participate in the festival.

About 50 *palkhis* (palanquins) arrived in Shirdi from all over Maharashtra and other states for the *Guru Pournima* festival. The Shri Sai Baba Palkhi Sohla (function) Committee, Pune's *palkhi* from Pune, in particular, drew the attention of all. Shirdi reverberated with the sound of *dhol* (drum) beats by the *dhol* squads that accompanied the *palkhis*.

75,000 sq. ft. of cloth *mandaps* (temporary sheds) were erected at various places in the temple and surrounding premises by the Sansthan, for the convenience of Sai devotees. 275 quintals of sugar *ladoos* (a sweetmeat) were prepared to ensure

I[st] day, Friday, July 11, 2014

Kakad Aarati

Madhyan Aarati

Dhooparati

Shejarati

easy availability of *ladoo prasad* (blessing) to the Sai devotees. Free shelter facility for *padayatris* (pilgrims on foot) accompanying the *palkhis* was arranged at the Sai Ashram Dharmshala (charitable rest house) - phase 2.

Shri Sai Baba's *Kakad Aarati* was done on Friday, July 11, the first day of the festival at 4.30 a.m. After that at 5 a.m. a *Shobhayatra* (grand procession) of Shri Sai Baba's Photo, Shri Sai Sat Charita *Granth* (holy book) and the *Veena* was taken from the Sai temple to Dwarkamai. Sri Kundankumar Sonawane, Member of the 3-Members Managing Committee and Executive Officer of the Sansthan, Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer, Sri Bhausaheb Sabale and Sri Subhash Garkal, Administrative Officers and others participated in the *Shobhayatra*. After the *Shobhayatra* reached Dwarkamai, *akhand parayan* (non-stop reading) of Shri Sai Sat Charita commenced. Sri Kundankumar Sonawane, Executive Officer read the first chapter and Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer read the second chapter. Shri Sai Baba was given the holy bath at 5.20 a.m. The *Padyapooja* (worship of the holy feet) of Shri Sai Baba was done at 6 a.m. by Executive Officer Sri Kundankumar Sonawane and his wife.

The *Madhyan* (mid-day) *Aarati* was done at 12.30 p.m.

A programme of *kirtan* by *kirtankar Hari Bhakta Parayan (H.B.P.)* Sri Madhav Ajegaokar (Parbhani) from 4 to 6 p.m. on the stage beside the Sai Samadhi Mandir. The *Dhooparati* of Shri Sai Baba was done at 7 p.m.

'Shri Sai Amrut Katha' programme by Sri Sumeet Ponda (Bhopal) was held on the stage beside the Sai Samadhi Mandir, from 7.30 p.m. to 10.30 p.m. All the artistes, who participated in the programme were felicitated on behalf of the Sansthan. At 9.15 p.m. a *Shobhayatra* of Shri Sai Baba's *Palkhi*, amidst

Shobhayatra* of Shri Sai Baba's *Palkhi

Main day, Saturday, July 12, 2014

Kakad Aarati

Dhooparati

the sounding of musical instruments, was taken from Sai temple to Dwarkamai and from there through the Shirdi town. Local Sai devotees and those that came from outside areas participated in this *Shobhayatra*. Squads of varied instruments – cymbals, lezims and bands, participated in the *Shobhayatra*. Since the *akhand parayan* (non-stop reading) of Shri Sai Sat Chrita was on for the festival, Dwarkamai was kept open throughout the night.

Saturday, July 12 was the main day of the festival. Shri Sai Baba's *Kakad Aarati* was done at 4.30 a.m. After that at 5 a.m. a *Shobhayatra* of Shri Sai Baba's Photo, Shri Sai Sat Charita *Granth* (holy book) and the *Veena* was taken from Dwarkamai to Gurusthan and from there to Sai Samadhi Mandir. Sri Shashikant Kulkarni, Chairman of the 3-Members Managing Committee of the Sansthan, Sri Kundankumar Sonawane, Member and Executive Officer of the Sansthan, Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer and others participated in this *Shobhayatra*. Villagers and Sai devotees were present in this *Shobhayatra* in large numbers. After the *akhand parayan* and the holy bath of Shri Sai Baba, the *Aarati* 'Shirdi *majhe*

Madhyan Aarati

Pandharpur' was sung. At 6 a.m. the *Padyapooja* of Shri Sai Baba was done by the Chairman Sri Shashikant Kulkarni and Sou Sushma Kulkarni. On this day Maharashtra's Agriculture and Marketing Minister Sri Radhakrishna Vikhe Patil alongwith his wife took the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* in the morning.

The *Madhyan Aarati* was done at 12.30 p.m.

A programme of *kirtan* was presented by H.B.P. Sri Madhav Ajegaokar from 4 to 6 p.m. *Dooparati* of Shri Sai Baba was done at 7 p.m.

'Saiswar Nrutyotsav' a programme based on Marathi and Hindi songs was presented by Sri Vijay Sakharkar (Mumbai) on the stage beside the Sai Samadhi Mandir, from 7.30 p.m. to 10.30 p.m. All the artistes, who participated in the programme were felicitated on behalf of the Sansthan. At 9.15 p.m. a *Shobhayatra* of Shri Sai Baba's Golden Chariot, was taken from the Sai Samadhi Mandir to Dwarkamai and from there through the Shirdi town. Local *bhajan* troupes and squads of varied instruments – cymbals, lezims and bands, participated in the *Shobhayatra*. Being the main day of the festival, the Sai Samadhi

***Shobhayatra* of Shri Sai Baba's Chariot**

'Sainchya Sannidhyat' (Marathi) now in book form

Sou Mugdha Sudhir Divadkar's series *'Sainchya Saanidhyat'* (Marathi) is being regularly published in Shri Sai Baba Sansthan's periodical 'Saileela' since several years in instalments. Anubandh Prakashan of Pune has now published this popular series in a book form. After placing the book at the Holy Feet of Shri Sai Baba in the Sai Samadhi Mandir on the auspicious occasion of *Guru Pournima*, Sri Kundankumar Sonawane, Executive Officer of the Sansthan released the holy book in the presence of Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer, Sri Mohan Yadav, Public Relations Officer, Sou Mugdha Sudhir Divadkar, the author of this book, Sri Sudhir Divadkar, Sri Anil Kulkarni, the publisher, Sou Asmita Anil Kulkarni, Sri Prakash Samant, DTP operator for the Sansthan's periodicals Saileela (Marathi), Shri Sai Leela (Hindi-English) and others related. The biographies of 77 Sai devotees, who had the fortune of being with Shri Sai Baba, have been portrayed in this book.

Mandir was kept open for the *Darshan*, throughout the night. Artistes presented programmes from mid-night 12 to 5 a.m.

On Sunday, July 13, the concluding day of the festival, Shri Sai Baba was given the holy bath at 5.05 a.m. Executive Officer of the Sansthan,

Concluding day, Sunday, July 13, 2014

Kakad Aarati

Madhyan Aarati

Dhooparati

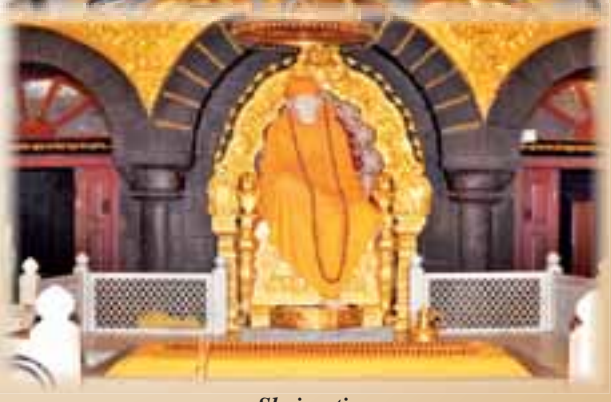

Shejarati

Kala kirtan : **H.B.P. Sri Madhav Ajegaokar**

Sri Kundankumar Sonawane alongwith his wife performed the *Rudra Abhishek* worship at 6 a.m. Deputy Executive Officer Sri Appasaheb Shinde alongwith his wife did the *Padyapooja*. H.B.P. Sri Madhav Ajegaokar presented *kala-kirtan* programme at 10.30 a.m.

As per the tradition every year, after the Gopalkala *kirtan*, the *dahi-handi* (pot of curd) was broken in the Sai Samadhi Mandir at 12 noon and after that the *Madhyan Aarati* was done. H.B.P. Sri Madhav Ajegaokar was felicitated on behalf of the Sansthan.

Shri Sai Baba's *Dhooparati* was done at 7 p.m.

'Sai Milan ki Aas' programme was presented by Sri Vishwanath Ojha (Srirampur) on the stage beside the Sai Samadhi Mandir, from 7.30 p.m. to 10.30 p.m. All the artistes, who participated in the programme were felicitated on behalf of the Sansthan.

All the administrative officers, departmental heads and employees under the guidance of Sri Shashikant Kulkarni, Chairman of the 3-Members Managing Committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge (Ahmednagar), Sri Anil Kawade, Member and District Collector (Ahmednagar), Sri Kundankumar Sonawane, Member and Executive Officer and Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer took special efforts for the successful conduct of the festival.

Calling Attention

❊ Philanthropic Sai devotees of Bengaluru, Sri Subramani Raju and Sri Prasad Babu donated the entire floral decoration in the temple and surrounding premises and Sairaj Decorators of Mumbai and their associates did the spectacular electric lighting in the temple and surrounding premises free of cost.

❊ 2 lakh Sai devotees were served free *prasad* meal in the Sai Prasadalaya during the festival days from the generous donation made by Shravani and Sarathi Kalvapalli (Secunderabad), Vrunda Sundaram (New Delhi), Karumudi Venkatraman Reddy (Chirala), Adhyan Narang (Mumbai), Anil Dighikar (Mumbai), Ghanshamdas Ramkisan Masani (Gondia), Sunil Agrawal (Mumbai), Shivprakash Gupta (Mumbai), Sudish Timmaraju (Hyderabad), Karanam Narayan (Hyderabad), Shishir Pandeya (Sai Graphic, Jabalpur) and Ponnapula Parthasarthy and Sulochana Kartik Sanjay (Hyderabad).

❊ 2.5 lakh ladoo packets were distributed free of cost to Sai devotees in the *Darshan* queue.

❊ Various television channels aired live telecast of the festival that enabled innumerable Sai devotees to have *Darshan*, direct in their homes.

❊ Ambulances and medical teams were kept in readiness to handle any emergencies.

Hail! Hail! *Sadguru*, treasury of mercy. Hail! Hail! Dweller on the banks of the river Godavari. Hail! Hail! Brahma, Shankar and Vishnu, Incarnation of Datta. I bow to You. Brahma's *Brahmanand* cannot exist without the *Sadguru*. I offer my five *pranas* to You and with total dedication surrender to You for protection. I bow my head in obeisance, press His Feet with my hands, gaze at His face, and inhale the sacred water which washes His Feet. Keep listening to the praises of Sai; enshrine His image in the mind and incessantly meditate on Sai. This will break your bonds with worldly life. Offer body, mind and wealth completely at the Feet of the *Sadguru*. Spend the entire life serving the *Guru*. The name of the *Guru* and the intimate association with the *Guru*, the grace of the *Guru* and the milk-like sacred water which has washed His Feet; the sacred *'mantra'* from the Guru and residence in His household - these could be obtained with great efforts.

- Shri Sai Sat Charita -

For Sai *Darshan*

Thursday, May 8, 2014 : At the release of the English translation of original Shri Sai Sat Charit (written by Sri Hemadpant) by Monika, Penukonda, America in Shirdi, after the *Darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*, Executive Officer Sri Ajay More, Deputy Executive Officer Sri Appasaheb Shinde and Public Relations Officer Sri Mohan Yadav...

Thursday, May 15, 2014 : Union Heavy Industries Minister Sri Praful Patel...

Sunday, May 25, 2014 : Former President of India Smt. Pratibha Patil with her husband...

Monday, May 12, 2014 : Former Prime Minister Sri H. D. Devegowda with his family members...

Sunday, May 25, 2014 : Revenue and Salt Land Minister of Maharashtra Sri Balasaheb Thorat...

Thursday, May 29, 2014 : Governor of Andaman Nicobar Islands Sri A. K. Singh...

Obeisance to You *Sadgururaya*, abode of rest for both the movable and the immovable. You, the dwelling place of the whole world, are the Compassionate One.

For Sai *Darshan*

Thursday, June 5, 2014 : Cine Actress Shilpa Shetty...

Friday, June 6, 2014 : Cricketer Yuvraj Singh with his family...

Sunday, June 22, 2014 : Chairman of Yuva Sena Aditya Thackery with his mother Sou Rashmi Thackery...

Shri Sainath is such - the Compassionate and Powerful *Sadguru*, Who can be known by the Inner Self. All-transcendent, eternal one, to You I bow.

- Shri Sai Sat Charita -

Friday, June 6, 2014 : Cricketer Mohit Sharma with his family...

Saturday, June 14, 2014 : Actor Shailesh Lodha of TV serial 'Tarak Mehta ka Ulta Chashma' fame with his wife...

Monday, July 7, 2014 : At the felicitation function after Shri Sai *Darshan*, Dr. Govind Tandon, Secretary - Pashupati Area Development Fund, Kathmandu, Nepal and his associates, with Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer of the Sansthan and Sri Raghunath Aher, Deputy Executive Engineer of construction department of the Sansthan....

Thursday, May 29, 2014 : Shirdi Sai Trust, Chennai donated 5 EICHER – make buses costing Rs. 66,50,000/- to Shri Sai Baba Sansthan, Shirdi. Sri Ajay More, Executive Officer of the Sansthan, Sri S. N. Garkal, Sri S. V. Game and Sri U. P. Gondkar – Administrative Officers, departmental heads of transport department and employees were present on the occasion.

Friday, May 30, 2014 : This year – 2014 is being celebrated as the golden jubilee year to mark the completion of 50 years of Shri Sainath Hospital of Shri Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi). About 2000 patients availed benefit of the various free camps organized to commemorate the occasion.

Diabetes check-up and awareness camp was organized on Saturday, May 3, 2014. 160 patients participated in this. Renowned diabetologist Dr. Deepak Bhosale of Aurangabad guided the patients. Free eye check-up and cataract operation camp was organized from Monday, May 5, 2014 to Saturday, May 10, 2014. 1346 needy patients availed services of this camp. The hospital's ophthalmologists successfully operated 175 patients with cataract. Similarly, free ear check-up and hearing aids distribution camp was organized from Monday, May 19, 2014 to Wednesday, May 21, 2014. 755 patients availed the benefit of this camp and 300 patients were given hearing aids. A workshop on 'Stress-free and happy life' was organized from Tuesday, May 20, 2014 to Saturday, May 24, 2014, in association with Prajapita Brahmakumari Ishwariya Vishwa Vidyalay, for the employees of the Sansthan. All case papers for patients in the OPD were given free throughout the month of May, 2014.

Dr. Prabhakar Rao, Medical Director, Dr. Sanjay Pathare, Medical Superintendant, Dr. Praful Porwal, Dr. B. B. Sabale, Ophthalmologist Dr. Sunil Sontakke, Dr. Mrs. Manisha Agrawal, ENT Specialist Dr. Ravindra Kulkarni, Superintendant Sri Shekade, all male and female nurses and employees under the guidance of Sri Ajay More, Executive Officer of the Sansthan and Sri Appasaheb Shinde, Deputy Executive Officer took great efforts for the successful conduct of these camps.

Tuesday, June 17, 2014 : 244 patients availed the free eye check-up at the eye check-up camp jointly organized by the Shri Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) and Lions Club of Shirdi at the Shri Sainath Hospital, informed Executive Officer of the Sansthan, Sri Kundankumar Sonawane.

Sri Sonawane stated that a free eye check-up and cataract operation camp was organized from Wednesday, June 4, 2014 to Friday, June 6, 2014 at the Shri Sainath Hospital. 244 poor and needy patients from Shirdi and surrounding areas were examined at the camp. The Sansthan's Ophthalmologist Dr. Sunil Sontakke conducted cataract operation on 107 needy patients, diagnosed for the same, and with assistance from the Lions Club of Shirdi free spectacles were distributed. Dr. Eknath Gondkar, Sri Vasant Kadam, Sri Vishal Tidke and other members of the Lions Club of Shirdi graced the occasion.

Medical Director Dr. Prabhakar Rao, Dr. Sanjay Pathare, Ophthalmologist Dr. Sunil Sontakke and employees of the Sansthan took great efforts under the guidance of Deputy Executive Officer Sri Appaseb Shinde for the successful conduct of the camp.

❍❍❍